A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 01 अक्टूबर, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 34, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

जाति पर राजनीति के खेल में कौन जीत और कौन हार रहा?

अरविंद मोहन

इससे बड़ी विडंबना क्या हो सकती है कि जो भाजपा कर्नाटक की जातिवार जनगणना में कदम-कदम पर विरोध और दबाव की राजनैतिक लड़ाई में जुटी है, वहीं उत्तर प्रदेश में जाति के नाम के साथ राजनीति करने पर ही नहीं, प्रशासनिक मामलों में, खासकर पुलिस एफआईआर में, जाति का जिक्र बंद करने का फैसला कर चुकी है। बीजेपी ने ओडिशा के मैदान को जीतने में पाइका आंदोलन और खंडायतों को जाति की याद दिलाने का सहारा लिया तो बंगाल के काफी हद तक जाति बिसरा चुके समाज में मतुआ लोगों के सहारे पैर जमाने की कोशिश करती रही है। यही भाजपा जब राजस्थान और मध्य प्रदेश में मजबूती महसूस करती है तो जाति भुला देती है, बिहार में चुनाव होने को हैं तो जाने किस किस जाति के संगठनों का अधिवेशन और सम्मेलन कराती है। शुद्ध जाति की राजनीति, जिसे कई बार सामाजिक न्याय और सेकुलरिज्म की चादर से ढकने की कोशिश होती है, करने वाले दल बिहार और उत्तर प्रदेश में ही अलग-अलग फार्मूले बनाकर बिखरी छोटी जातियों और दलितों को साथ लाने में लगे हैं तो अब भी कोई दल अगड़ों को भी नाराज करना नहीं चाहता। बिहार में राजद भी भूमिहारों को पटाने के लिए राज्य सभा की सीट देती है। खैर।

पर अभी बिहार और कर्नाटक के मामलों को देखकर कुछ चीजें समझने की कोशिश करनी चाहिए। कर्नाटक में दोबारा जातिवार जनगणना शुरू हुई है, जो दो सप्ताह चलेगी। एक तो सात करोड़ लोगों का सर्वेक्षण इतने समय में कर पाने पर सवाल उठ रहे हैं तो हर जाति के नेता अपने-अपने लोगों की बैठक करके आवश्यक निर्देश दे रहे हैं। दलितों और आदिवासियों में यह नाराजगी है कि उन्हें एक साथ गिनने की जगह पचासों जातियों में बांटने से उनकी साझा राजनैतिक ताकत बिखर जाएगी।

सबसे ताकतवर लिंगायत और वोक्कालिगा जैसी संख्या और प्रभाव में बड़ी जातियों की भी शिकायत है कि राज्य के स्थायी पिछड़ा वर्ग आयोग ने उनके अंदर भी ब्राह्मण ईसाई, वॉक्कालिगा ईसाई और लिंगायत ईसाई ही नहीं 29 अन्य समूहों को इसी तरह अलग गिनने का सुझाव दिया था, जो मान लिया गया है। यह सुझाव कंठराज आयोग का था। भाजपा की शिकायत है कि ऐसा प्रभावी सामाजिक समूहों की ताकत बिखेरने की रणनीति से किया गया है। उधर लिंगायतों को अलग धर्म का बताने का आंदोलन भी जारी है और इसी चक्कर में एक बड़े कोडलसंगम पीठ के प्रमुख को हटाया भी जा चुका है। उन्होंने लिंगायतों को हिन्दू बताने की 'गलती' की थी। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया पिछड़ों की राजनीति करते रहे हैं और उनका दावा है कि सर्वेक्षण जाति के साथ आर्थिक सामाजिक स्थिति की भी है और इससे शिकायतें दूर होंगी।

यह उदाहरण ज्यादा लंबा दिया गया है क्योंकि इसके बगैर जाति और जनगणना के संबंधों को समझा नहीं जा सकता और फिर मौजूदा राजनीति में जाति के खेल को भी नहीं समझा जा सकता। और माना जाता है कि जिन जातियों में चेतना थी और जिनके नेता तभी होशियार थे, उन्होंने सौ साल से भी पहले की गिनती के वक्त एकजुटता दिखाने और संख्या बढ़ाने को ही नहीं अपनी जाति को अगड़ा-पिछड़ा या अछूत गिनवाने की चालाकी बरती जिसका लाभ अभी तक मिल रहा है। बल्कि आज उस लाभ को वापस लेना किसी के वश का नहीं है। कहा जाता है कि मण्डल के समय चौधरी चरण सिंह ने अपनी बिरादरी के नेताओं से पूछा था कि जाटों को ओबीसी में शामिल करवा दिया जाए तो उन्होंने विरोध किया। दूसरी ओर तब अन्याय का शिकार हो गए जाट समेत अन्य जातियों में देर से जगी चेतना भी बार-बार जोर मारती है और हर राज्य की सूची में नीचे से ऊपर आने वाली जातियों की संख्या बढ़ी है। एक मांग क्रीमी लेयर की भी उठती है। कई जगह विभिन्न श्रेणियों के अंदर भी पिछड़ा-अति पिछड़ा, दलित-महादलित जैसा विभाजन ही नहीं मुसलमानों में भी अगड़ा-पसमांदा जैसा विभाजन होने लगा है।

बिहार में तो नीतीश कुमार ने चार बड़ी जातियों के अलावा सौ से ज्यादा छोटी जातियों को 'अति पिछड़ा' बनाकर उनके लिए आरक्षण में अलग व्यवस्था कराई। इसका लाभ दिखा। लेकिन अब यह शिकायत आम है कि उनके अंदर भी सूढी, कलवार, तेली और सोनार जैसी जातियों के लोग ही सारा लाभ बटोर रहे हैं, जबकि 37 फीसदी संख्या वाले इस समूह के ज्यादातर लोगों की स्थिति दलितों से बदतर है।

उत्तर प्रदेश की लड़ाई भी राजभर, गुर्जर, निषाद, पटेल और मौर्या जैसी सचेत हुई जातियों के नेताओं-पार्टियों की तरफ़ से भाजपा सरकार पर आ रहे दबाव की है। पर दिलचस्प तथ्य यह भी है कि इन दोनों राज्यों के अति पिछड़े समूह प्रभावी पिछड़ी जाति यादवों से उसी तरह डरने लगी है जैसे कभी उनको अगड़ों से लगता था। मजेदार यह है कि पिता के चलते नेता बने अखिलेश यादव और तेजस्वी यादव अपने नेतृत्व के आग्रह से ऐसे मोहग्रस्त हैं कि किसी अन्य को पास बैठने नहीं देते। आंध्र में रेड्डियों, कर्नाटक में लिंगायतों और वोक्कालिगाओं, राजस्थान, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों मे जाटों के दबदबे से पिछड़ी जातियों और दलितों को शिकायत है।

असल में जाति का अपना गणित है जो काल और स्थितियों से निरपेक्ष नहीं है। कई सारी जातियों का धंधा आज है ही नहीं। भिश्ती अब कहां दिखेंगे। खेती खत्म होती जा रही है तो खेतिहर जातियों के पास संख्या के अलावा क्या कुछ बचेगा। जब पशुपालन मॉडर्न होकर सबका धंधा बन जाएगा तो पशुपालक जातियों के पास संख्या ही बचेगी। सो दलितों के पास, ज्यादातर पिछड़ों के पास संख्या का खेल ही बचा है और वह भी इसलिए कि इस चुनावी लोकतंत्र में उसका एक महत्व है। उससे चुनी सरकारों की नीतियों और कार्यक्रमों पर इस संख्या और समर्थक वोटर समूह का दबाव जरूर रहता है लेकिन उनसे हजार गुना ज्यादा दबाव पैसे का, मीडिया का, सस्ते जनमत का, दिखावे का रहता है। अंग्रेजी का, पुरुष-प्रधानता का, अगड़ा-पिछड़ा इलाके का, दासी और रानी वाली स्थिति की भाषाओं और बोलियों का रहता है।

कितना भी पिछड़ा नेता आए प्राम्प्टर से या ट्यूशन से अंग्रेजी बोलना उसकी मजबूरी है, अंबानी-अडानी के लिए प्रोजेक्ट देना उसकी मजबूरी है, धार्मिक कर्मकांड में दिखावा करना मजबूरी है। न करने पर वह टिक ही नहीं सकता। और जाति या अगड़ा-पिछड़ा या हिन्दू-मुसलमान सिर्फ चुनाव जीतने का खेल रह गया है। इसलिए यह समझना जरूरी है कि सिर्फ जाति गिनोगे तो जातिवादी रह जाओगे। और फिर अन्य जातियाँ तुम्हें निपटा देंगी जैसा कि राज्यों में अगड़ों के साथ हो चुका है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

पंजाब के बाद अब महाराष्ट्र में संकट, हर ओर पानी-पानी

- 3 हजार से ज्यादा गांवों में बाढ़, 104 लोगों की मौत
- दिल्ली में 5 फ्लाइट की गई डायवर्ट, जयपुर में लैंडिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र के आठ जिलों में 3,050 गांव बाढ़ से प्रभावित हैं। 1 जून से 29 सितंबर तक बारिश-बाढ़ के कारण 104 लोगों की मौत हो गई है। नांदेड़ में सबसे ज्यादा 28 लोगों की मौत हुई। इसके अलावा संभाजीनगर, बीड, हिंगोली, जालना, धाराशिव, परभणी और लातूर में लोगों की जान गई। मराठवाड़ा में 2,701 किलोमीटर सड़कें टूट गईं और 1,504 पुल क्षतिग्रस्त हैं। 1,064 स्कूल, 352 केंद्र और 58 सरकारी बिल्डिंग को भी नुकसान पहुंचा। बारिश-बाढ़ को देखते हुए महाराष्ट्र बोर्ड ने 12वीं क्लास के एग्जाम फॉर्म भरने की तारीख 30 सितंबर से बढ़ाकर 20 अक्टूबर की है। इधर, मंगलवार दोपहर दिल्ली-एनसीआर में तेज बारिश हुई। खराब मौसम के कारण दिल्ली एयरपोर्ट लैंड होने वाले 5 फ्लाइट जयपुर डायवर्ट की गईं। सभी फ्लाइट दोपहर 12.15 बजे से 12.30 बजे के बीच डायवर्ट की गईं। इंडिगो, एयर इंडिया और स्पाइसजेट की दूसरी फ्लाइट भी प्रभावित हुई हैं। उत्तर प्रदेश के 20 शहरों में मंगलवार सुबह से भारी बारिश हो रही है। मथुरा में घरों में नाले का पानी घुस गया। मथुरा गेट थाना के सामने दो फीट से ज्यादा पानी भर गया। हापुड़ में दिल्ली रोड स्थित रामलीला मैदान में रावण और मेघनाथ के पुतले गिर गए। गुजरात में सोमवार को कई हिस्सों में तेज हवाओं के साथ भारी बारिश हुई। इससे द्वारका में कल्याणपुर को पोरबंदर से जोड़ने वाला स्टेट हाईवे डूब गया। कल्याणपुर के पास एक कार पानी में बह गई। वडोदरा में गरबा पंडाल ढह गए।

बिहार में एसआईआर की फाइनल लिस्ट जारी

- 69 लाख नाम हटे, 21 लाख नए जुड़े, कुल वोटर्स की संख्या 7.41 करोड़

पटना (एजेंसी)। चुनाव आयोग ने बिहार में स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) की फाइनल लिस्ट मंगलवार को जारी कर दी है। बिहार में अब कुल वोटर्स की संख्या 7.41 करोड़ हो गई है। फाइनल लिस्ट से 69 लाख नाम हटे हैं। 21 लाख नए नाम जुड़े हैं। ड्राफ्ट लिस्ट से जो 65 लाख नाम कटे थे उसमें 17 लाख नामों को लिस्ट में जोड़ा गया है। फाइनल एसआईआर लिस्ट में पटना जिले में 1 लाख 63 हजार 600 मतदाता बढ़े हैं। पटना में पहले 46 लाख 51 हजार 694 मतदाता थे। फाइनल रोल में 48 लाख 15 हजार 694 मतदाताओं के नाम हैं। वहीं, सारण में 2 लाख 24 हजार 768 मतदाताओं का नाम कट गया है। पहले यहां 31 लाख 27 हजार 451 वोटर्स थे, जो अब घटकर 29 लाख 02 हजार 683 हो गए। ईसी के अनुसार, एसआईआर की प्रक्रिया जून 2025 से शुरू की गई थी। इसमें 7.89 करोड़ रजिस्टर्ड वोटर्स से दोबारा फॉर्म भरवाए गए थे। इसके बाद 1 अगस्त को लिस्ट जारी की गई, जिसमें 65 लाख वोटर्स के नाम काटे गए हैं।

क्षेत्र की समृद्धि और किसानों की खुशहाली का आधार बनी मोहनपुरा-कुंडालिया सिंचाई परियोजना: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा है कि किसानों की समृद्धि के लिए हर खेत तक पानी पहुंचाने के लिए प्रदेश के राजगढ़ जिले की 'मोहनपुरा-कुंडालिया सिंचाई परियोजना' क्षेत्र की समृद्धि और किसानों की खुशहाली का आधार बन रही है। इस अनूठी परियोजना से जहां हर खेत में पानी पहुंच रहा है, वहीं उद्योगों को पानी मिलने और पेयजल की उपलब्धता ने नए निवेश के साथ रोजगार के अवसर बढ़ाए हैं। इससे आम-जीवन सुखमय हो रहा है।

प्रधानमंत्री की पर ड्रॉप मोर क्रॉप की अवधारणा हुई फलीभूत- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पर ड्रॉप, मोर क्रॉप की अवधारणा दी. उनकी इस अवधारणा पर कार्य करते हुए हमारे इंजीनियर्स ने सिंचाई की अति आधुनिक तकनीकी प्रेशराइज्ड पाइप नेटवर्क पर काम करना प्रारंभ किया और उसका सुपरिणाम है मोहनपुरा कुंडलिया सिंचाई परियोजना। इस सिंचाई परियोजना के माध्यम से न केवल 80त्न पानी बांध से किसानों के खेतों तक पहुंचता है, अपितु ऊंचे खेतों पर भी पानी आसानी से पहुंच जाता है. इसमें लगा स्काडा आधारित ऑटोमेशन यह तय करता है कि फसलों की आवश्यकता के अनुसार किस क्षेत्र में कितना पानी पहुंचाना है। यह विश्व की अपनी तरह की अनूठी परियोजना है और आधुनिक युग की आवश्यकता भी, जब पानी की एक-एक बूंद का उपयोग आवश्यक है।

नेवज नदी पर मोहनपुरा बांध और कालीसिंध नदी पर कुंडालिया बांध बनाकर शुरू की गई इस परियोजना से भूमिगत पाइप से सीधे खेत तक दबाव के साथ पहुंचाती है और ऊंचाई वाले खेत में भी पानी आसानी से पहुंचता है। इसके सेंसर और ऑटोमेशन से पानी का वितरण नियंत्रित होता है। यह क्रांतिकारी सोच थी, जिसने सूखाग्रस्त राजगढ़ जिले की किस्मत बदल दी।

प्रेशराइज्ड पाइप नेटवर्क पर आधारित विश्व की अनूठी परियोजना

यह परियोजना प्रेशराइज्ड पाइप नेटवर्क प्रणाली पर आधारित विश्व की अनूठी सिंचाई परियोजना है, जो मध्यप्रदेश में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पर ड्रॉप, मोर क्रॉप की अवधारणा को पूरा कर रही है। न केवल भारत के विभिन्न राज्यों से अपितु विदेशों के प्रतिनिधि दल भी आकर इसका अध्ययन कर रहे हैं। परियोजना को जल-संसाधन प्रबंधन के लिए भारत सरकार का प्रतिष्ठित सीबीआईपी पुरस्कार भी मिल चुका है।

परियोजना के अंतर्गत 26 हजार किमी लंबी भूमिगत पाइपलाइन बिछाई गई है, इतनी लंबी प्रेशराइज्ड पाइप लाइन भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में एक मिसाल है। इसे जोड़ने के लिए 20 बड़े पंपिंग स्टेशन बनाए गए हैं, जो पानी को दबाव के साथ पाइप लाइन में भेजते हैं और पानी ऊंचे-नीचे खेतों तक आसानी से पहुंचता है। हर आउटलैट से लगभग एक से सवा हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई होती है। स्काडा आधारित ऑटोमेशन सिस्टम द्वारा पूरी प्रणाली को कंप्यूटर और सेंसर्स से जोड़ा गया है, जिससे कंट्रोल रूम से तय किया जा सकता है कि किस क्षेत्र को कितना पानी पहुंचाना है। केन्द्रीकृत पंपिंग प्रणाली से हर साल लगभग 69 मिलियन यूनिट बिजली की बचत होती है। इसकी एक और विशेषता यह है कि इसमें ला-रा नैटवर्क का इस्तेमाल किया गया है, जिसमें लगभग 1.5 लाख सेंसर्स और कंट्रोलर एक साथ जोड़े गए हैं, जो सौर ऊर्जा से चलते हैं। पंपिंग स्टेशनों में लगे वैरिएबल फ्रीकवैन्सी ड्राइव्ज फसलों की जरूरत और मौसम के अनुसार पानी का दबाव और मात्रा तय करते हैं। यह अत्यधिक आधुनिक सिंचाई प्रणाली आज पूरे विश्व के लिए पानी के इष्टतम उपयोग का अनूठा उदाहरण बन गई है।

नौवमी मां सिद्धिदात्री

मां सिद्धिदात्री आपको जीवन में अद्भुत सिद्धि, क्षमता प्रदान करती है ताकि आप सब कुछ पूर्णता के साथ कर सकें। सिद्धि का क्याअर्थ है। सिद्धि, सम्पूर्णता का अर्थ है विचार आने से पूर्व ही काम का हो जाना। आपके विचारमात्र, से ही, बिना किसी कार्य किये आपकी इच्छा का पूर्ण हो जाना यही सिद्धि है।

सुप्रभात

एक एक कर विदा हो रहे
सभी पुराने वाले लोग !
धोती कुर्ता सदरी टोपी
गमछा नीली धारी का
और हाथ में रहता जिनके
बटुआ एक सुपारी का
उँगली में चूना चिपकाकर
पान चबाने वाले लोग !
एकादशी प्रदोष अमावस
का हिसाब रखने वाले
बड़े-बड़े मटकों में सिरका
गुड़ व राब रखने वाले
फगुआ चैता बारहमासा
कजरी गाने वाले लोग !

गाँव पड़ोसी के हर दुख में
नयन बहाने वाले सब
बिना काम के भी रिश्ते-
दारी में जाने वाले सब
चिठ्ठी पढ़ने वाली आँखें
चिठ्ठी लाने वाले लोग !

- ज्ञानप्रकाश आकुल

इलेक्ट्रिक गाड़ियां अब पेट्रोल-डीजल की तरह करेंगी आवाज

अकॉस्टिक व्हीकल अलर्टिंग सिस्टम 1 अक्टूबर 2026 से अनिवार्य, पैदल यात्रियों को करेगा अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। इलेक्ट्रिक गाड़ियां जल्द ही पेट्रोल और डीजल गाड़ियों की तरह आवाज करते हुए नजर आएंगी। कंपनियों को इलेक्ट्रिक गाड़ियों में अकॉस्टिक व्हीकल अलर्टिंग सिस्टम अनिवार्य रूप देना होगा। इस संबंध में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने कंपनियों को नोटिफिकेशन जारी किया है। इस सिस्टम से गाड़ी कम स्पीड पर पहुंचने पर नॉर्मल (पेट्रोल-डीजल) गाड़ियों की तरह आवाज करती है। इससे सड़क या फुटपाथ पर पैदल चल रहे लोगों को गाड़ी के आने का अलर्ट मिलता है। नई ईवीएस के लिए ये नियम 1 अक्टूबर 2026 से लागू होगा, जबकि मौजूदा मॉडल्स के लिए 2027 तक का समय मिलेगा। ये सिस्टम गाड़ी के 20 किमी प्रति घंटा से कम स्पीड पर पहुंचते ही एक आर्टिफीशियल साउंड (जैसे- हल्की बीप या ईवी स्पेसिफिक साउंड) जनरेट करेगा। इससे सड़क पर चल रहे लोगों (पैदल, साइकिल, स्कूटर सवार) को दूर से ही ईवी के आने का अलर्ट मिलेगा। हाई स्पीड पर ये सिस्टम ऑटोमैटिक बंद हो जाता है। सिस्टम स्पीकर या चेसिस से जुड़ा होगा और वॉल्यूम स्टैंडर्ड होगा ताकि ज्यादा शोर न हो। कुछ ईवीएस में ये साउंड कस्टमाइजेबल भी होगा, लेकिन बेसिक फंक्शन अनिवार्य रहेगा। अमेरिका, जापान और यूरोप जैसे देशों में ये पहले से नियम है। सेफ्टी एक्सपर्ट्स का कहना है कि यह बदलाव एक्सिडेंट रोक सकता है, खासकर शहरों में जहां पैदल यात्री ज्यादा होते हैं। देश में इलेक्ट्रिक गाड़ियों की बिक्री तो तेजी से बढ़ रही है, लेकिन इनका साइलेंट होना समस्या भी बन रहा है। पैदल यात्री या साइकिल सवारों को इनकी आवाज ही सुनाई नहीं देती, जिससे दुर्घटना का खतरा बढ़ जाता है। एक स्टडी के मुताबिक, ईवीएस में पैदल यात्रियों के लिए दुर्घटना का खतरा पेट्रोल-डीजल गाड़ियों से 20 फीसदी ज्यादा है। कम स्पीड पर ये खतरा 50 फीसदी तक पहुंच जाता है! इलेक्ट्रिक गाड़ियां इंजन न होने से आवाज नहीं करतीं, खासकर 20 किमी प्रति घंटा से कम स्पीड पर ये एक दम साइलेंट होती हैं। एवीएएस सेफ्टी फीचर से ईवी पेट्रोल-डीजल गाड़ियों की तरह आवाज करती हैं। इसलिए सरकार ने एवीएएस अनिवार्य करने का फैसला लिया है। सरकार के मुताबिक, ये नियम समय-समय पर अपडेट होंगे, ताकि टेक्नोलॉजी के साथ तालमेल बना रहे।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c

न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 01 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

24 आईएएस अफसरों के तबादले, 12 कलेक्टर बदले

संस्कृति बनीं भोपाल नगर निगम की कमिश्नर; नीरज वशिष्ठ पांढुर्णा के नए कलेक्टर

भोपाल (नप्र)। राज्य शासन ने मंगलवार को 24 आईएएस अफसरों के तबादले करते हुए 12 कलेक्टर बदल दिए हैं। जिन जिलों के कलेक्टर बदले गए हैं उनमें पन्ना, पांढुर्णा, सिवनी, मुरैना, डिंडोरी, अलीराजपुर, निवाड़ी, भिंड, सिंगरौली, छिंदवाड़ा और रतलाम जिलों के कलेक्टर शामिल हैं।

पन्ना कलेक्टर रहे सुरेश कुमार को मुरैना का संभागायुक्त बनाया गया है। संस्कृति जैन को भोपाल नगर निगम का कमिश्नर बनाया गया है। नीरज कुमार वशिष्ठ पांढुर्णा के नए कलेक्टर होंगे।

राज्य शासन द्वारा जारी आदेश में कलेक्टर पन्ना सुरेश कुमार को ओएसडी सह आयुक्त चंबल संभाग मुरैना, छिंदवाड़ा कलेक्टर शीलेंद्र सिंह को अपर सचिव नगरीय विकास और आवास विभाग, नेहा मारव्या कलेक्टर डिंडौरी को संचालक विमुक्त घुमंतू और अर्ध घुमंतु जनजाति विभाग, संजीव श्रीवास्तव कलेक्टर भिंड को अपर सचिव लोक निर्माण विभाग, उषा परमार अपर आयुक्त राजस्व भोपाल संभाग को कलेक्टर पन्ना पदस्थ किया गया है।

ब्रह्मोस मिसाइलों में अपग्रेड करने की है असीमित क्षमता

- रूसी दूत ने दे दिए बड़े संकेत, पुतिन के दौरे पर भी बोले

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-रूस के बीच रक्षा सहयोग को मजबूत बनाने वाली ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल में आधुनिकीकरण की पूर्णतः असीमित संभावनाएं हैं। यह बात रूसी दूतावास के उप-प्रमुख रोमन बाबुश्किन ने कही। उन्होंने कहा कि यह मिसाइल दोनों देशों के बीच सबसे उन्नत और विश्वसनीय रक्षा साझेदारी का प्रतीक है। ब्रह्मोस, भारत और रूस के संयुक्त उद्यम का नतीजा है, जिसमें भारत की डीआरडीओ और रूस की एनपीओएम की विशेषज्ञता शामिल है। 1990 के दशक के मध्य में भारत की एडवांस क्रूज मिसाइल क्षमता की दिशा में पहल के रूप में इसकी शुरुआत हुई थी। बाबुश्किन ने कहा कि इस मिसाइल को उसके सामरिक पैमानों के आधार पर और भी ज्यादा सशक्त बनाया जा सकता है। गौरतलब है कि भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के खिलाफ ब्रह्मोस का इस्तेमाल किया था। भारत ने इस मिसाइल का निर्यात भी किया है, जिसमें फिलीपींस के साथ 375 मिलियन डॉलर का सौदा शामिल है, और कई अन्य देश भी इसे खरीदने के इच्छुक हैं।

यात्रीगण ध्यान दें आज से लागू हो रहा है 'ट्रेन' टिकट का नया नियम

पहले 15 मिनट होंगे बेहद अहम,आधार कार्ड जरूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगर आप भी दीवाली और छठ पर जाने का प्लान बना रहे हैं, तो आपको पहले एक बड़े बदलाव के बारे में जान लेना चाहिए। बता दें, 1 अक्टूबर से ट्रेन टिकट बुकिंग का नया नियम लागू हो रहा है। ये नियम पहले केवल तत्काल टिकट बुकिंग पर लागू हुआ था, लेकिन अब ये जनरल रिजर्वेशन टिकट पर भी लागू होगा। दरअसल, इसे रेल टिकट की बुकिंग में धांधली रोकने के उद्देश्य से इंडियन रेलवे ने ये बड़ा फैसला लिया है और इसके तहत 1 अक्टूबर 2025 से नियमों में बदलाव होने वाला है। नए नियम के मुताबिक रिजर्वेशन खुलने के बाद, पहले 15 मिनट में केवल ऐसे लोग ही ऑनलाइन टिकट बुक कर सकेंगे। जिनका आधार वेरिफेक्शन हो चुका है। अभी ये नियम तत्काल टिकट बुकिंग पर ही लागू है। रिजर्वेशन टिकट का ये नियम आईआरसीटीसी वेबसाइट और ऐप पर लागू होगा, जबकि कम्प्यूटर के जरिए काउंटर से टिकट लेने वालों के लिए समय या प्रक्रिया पहले की तरह ही लागू होगी। यानी बगैर आधार वेरिफिकेशन के टिकट बुकिंग करा सकेंगे। 1 अक्टूबर से आधार वेरिफाइड अकाउंट को ही प्राथमिकता दी जाएगी। पहले 15 मिनट तक वेरिफाइड आधार अकाउंट को छोड़कर और किसी को भी बुकिंग की अनुमति नहीं होगी। इस नियम से टिकट दलाली पर अंकुश लगेगा और ये सुनिश्चित हो सकेगा कि टिकट वेरिफाइड यूजर्स तक ही पहुंचे। आधार ऑथेंटिफिकेशन यूजर्स तक ही पहले ऑनलाइन बुकिंग को सीमित करके, भारतीय रेलवे सही तरह टिकट यूजर्स को दे सकेगी। इस तरह थोक बुकिंग कम होगी, और यात्री रेलवे की सुविधा तक आसानी से पहुंच सकेंगे। गौर करने वाली बात ये है ये नया नियम तब लाया गया, जब रेलवे ने जुलाई से तत्काल टिकट के लिए आधार कार्ड को जरूरी कर दिया। 1 जुलाई 2025 से तत्काल टिकट बुक करने के लिए आधार कार्ड देना जरूरी है। ये नियम आईआरसीटीसी वेबसाइट और ऐप दोनों पर लागू है।

फिर दहला पाकिस्तान 10 लोगों की हुई मौत

क्वेटा में भीषण धमाका, 30 से ज्यादा घायल,अस्पतालों में इमरजेंसी

क्वेटा (एजेंसी)। पड़ोसी देश पाकिस्तान बम धमाकों से फिर दहल उठा है। वहां के अशांत बलूचिस्तान प्रांत की राजधानी क्वेटा में मंगलवार को भीषण बम विस्फोट हुआ, जिसमें अब तक 10 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 30 लोग घायल हुए हैं। मरने वालों में फ्रंटियर कॉर्प्स के जवान भी शामिल हैं। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक धमाका बहुत जोरदार था।

धमाका होते ही धुएं का गुबार आसमान में छा गया और वहां अफरा-तफरी मच गई। उनके मुताबिक इस धमाके में कई लोग घायल हुए हैं। धमाके की भीषणता को देखते हुए वहां के अस्पतालों में इरजेंसी घोषित कर दी गई है। सभी डॉक्टरों, पैरामेडिकल स्टाफ, नर्सों को ड्यूटी पर मौजूद रहने का निर्देश दिया गया है और सभी की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं। यह विस्फोट क्वेटा के मुख्यालय के आगे हुआ है। अधिकारियों ने बताया कि मंगलवार को क्वेटा शहर के पूर्वी हिस्से में फ्रंटियर कॉर्प्स मुख्यालय के पास ये धमाका हुआ है। अधिकारी के मुताबिक, कार में हुए शक्तिशाली विस्फोट के बाद वहां भारी गोलीबारी भी हुई है।

मॉडल टाउन और आसपास के इलाकों में सुनाई देने वाले इस विस्फोट से आस-पास के घरों और व्यावसायिक इमारतों की खिड़कियों के शीशे टूट गए, जिससे इलाके में दहशत फैल गई। इसके तुरंत बाद, इलाके में गोलियों की तड़तड़ाहट गूंजने लगी, जिससे निवासियों में दहशत फैल गई। द एक्सप्रेस ट्रिब्यून अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, यह विस्फोट क्वेटा के जरघून रोड के पास हुआ। पुलिस के हवाले से इसमें कहा गया है कि शुरुआती जानकारी के मुताबिक विस्फोट में छह लोगों की मौत हो गई है। स्वास्थ्य सचिव मुजीबुर रहमान के हवाले से डॉन अखबार ने बताया कि बलूचिस्तान स्वास्थ्य विभाग ने शहर भर के अस्पतालों में आपातकाल घोषित कर दिया है। रहमान ने कहा, सभी सलाहकारों, डॉक्टरों, फार्मासिस्टों, स्टाफ नर्सों और पैरामेडिकल कर्मचारियों को अस्पतालों में मौजूद रहने का निर्देश दिया गया है। अखबार ने प्रांतीय स्वास्थ्य विभाग के मीडिया समन्वयक डॉ. वसीम बेग के हवाले से कहा, विस्फोट में घायल लोगों को सिविल अस्पताल के दुर्घटना एवं आपातकालीन विभाग और ट्रॉमा सेंटर लाया गया।

खजुराहो में ओबेरॉय समूह आरंभ करेगा पांच सितारा राजगढ़ पैलेस होटल

मुख्यमंत्री को शुभारंभ के लिए किया आमंत्रित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने खजुराहो के राजगढ़ पैलेस में ओबेरॉय समूह द्वारा द ओबेरॉय राजगढ़ पैलेस होटल आरंभ करने पर प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि देश के प्रतिष्ठित होटल समूह द्वारा आरंभ किए जा रहे पांच सितारा लग्जरी होटल से प्रदेश में पर्यटन को प्रोत्साहन मिलेगा। देश के साथ अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक भी हमारी समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक धरोहर और वन्य प्राणी पर्यटन की ओर आकर्षित होंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंगलवार को मुख्यमंत्री निवास आये ओबेरॉय समूह के श्री अर्जुन ओबेरॉय तथा श्री शंकर से चर्चा के दौरान यह बात कही। अपर मुख्य सचिव पर्यटन श्री शिव शेखर शुक्ला भी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को ओबेरॉय समूह के प्रतिनिधियों ने द ओबेरॉय राजगढ़ पैलेस होटल के शुभारंभ के लिए आमंत्रित किया।

उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार द्वारा राजगढ़ पैलेस के नवीनीकरण और जीर्णोद्धार कर उसे पांच सितारा होटल के रूप में संचालित करने के लिए ओबेरॉय समूह को लीज पर दिया गया है। द ओबेरॉय राजगढ़ पैलेस चंद्रनगर के पास मानगढ़ और मनियागढ़ की पहाड़ियों के मध्य हर-भरे बगीचों के बीच स्थित है। बुन्देला राजवंश द्वारा निर्मित 350 साल पुराना यह महल भारतीय स्थापत्य और पारम्परिक बुंदेलखंड की विशेषताओं का मिश्रण है। द ओबेरॉय समूह द्वारा विकसित राजगढ़ पैलेस होटल में महलनुमा रेस्टोरेंट, भव्य बैंक्वेट हॉल

सहित 66 भव्य कक्ष उपलब्ध हैं। यह कॉर्पोरेट आयोजनों, डेस्टीनेशन वेंडिंग्स, सामाजिक समारोह आदि के लिए आदर्श स्थान के रूप में स्थापित होगा।

प्रभारी मंत्री अपने प्रभार के जिलों में करें विकास और जनकल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में जारी विकास गतिविधियों, जनकल्याणकारी कार्यक्रमों और योजनाओं के मैदानी क्रियान्वयन की प्रभारी मंत्री अपने प्रभार के जिलों में समीक्षा करें। साथ ही जन समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर निराकरण करवायें।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अक्टूबर माह में राज्य स्तर पर कलेक्टर-कमिश्नर कॉन्फ्रेंस आयोजित की जाएगी। कॉन्फ्रेंस में सभी मंत्रीगण, कमिश्नर, कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक, संभागीय अधिकारी, आई.जी. सहित विभाग प्रमुख और सचिवालयीन अधिकारी शामिल होंगे।

दो और राज्यों में कांग्रेस बदलेगी अपना अध्यक्ष

सचिन पायलट को राजस्थान में मिल सकता है चांस!

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा प्रदेश में अध्यक्ष बदलने के बाद कांग्रेस पार्टी अब दो और राज्यों, राजस्थान और गोवा में प्रदेश अध्यक्ष में बदलाव कर सकती है और इसमें अन्य पिछड़ा वर्ग समुदाय के नेतृत्व को अवसर मिल सकता है। पार्टी ने हाल ही में हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष पद की कमान वरिष्ठ नेता राव नरेंद्र सिंह को सौंपी है। इसके अलावा पार्टी ने पूर्व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को हरियाणा कांग्रेस विधायक दल का नेता नियुक्त किया है। अब पार्टी राजस्थान और गोवा के नए प्रदेश अध्यक्ष पद पर नियुक्तियों पर गहराई से विचार कर रही है।

दो अक्टूबर से पहले लंदन में बड़ा कोहराम

महात्मा गांधी की प्रतिमा को किया गया क्षतिग्रस्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। दो अक्टूबर से ठीक पहले सेंट्रल लंदन में महात्मा गांधी की 57 साल पुरानी प्रतिमा को क्षतिग्रस्त करने की कोशिश की गई है। यह घटना सेंट्रल लंदन के टैविस्टॉक स्क्वायर की उस स्मारक की है, जहां कांस्य की मूर्ति में गांधी जी ध्यान मुद्रा में बैठे हैं। घटना की सूचना मिलते ही भारतीय हाई कमीशन के अधिकारी फौरन घटनास्थल पर पहुंचे और स्थानीय अधिकारियों को इसकी जानकारी दी। इसके बाद प्रतिमा को फिर से इसकी मूल स्थिति में वापस लाने की कोशिशें भी तत्काल शुरू कर दी गईं। लंदन स्थित भारतीय उच्चायोग ने इस घटना को शर्मनाक बताते हुए कड़ी निंदा की है। इस दौरान ऐसी भी रिपोर्ट है कि इस घटना के पीछे खालिस्तान समर्थकों का हाथ है।

खालिस्तानियों ने किया गांधी प्रतिमा पर हमला

एक वरिष्ठ पत्रकार आदित्य राज कौल ने घटना के बाद का एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें दिख रहा है कि हमलावर क्या करके गए हैं। वीडियो में दिख रहा है कि उन्होंने गांधी प्रतिमा के साथ छेड़छाड़ की तो कोशिश की ही है और साथ में काले रंग से लिखा है, गांधी- मोदी, हिंदुस्तानी टेररिस्ट...। वहां एक तिरंगे का भी अपमान किया गया है और उसपर भी टेररिस्ट लिखा हुआ है। कौल ने वीडियो के साथ कैप्शन में लिखा है, लंदन, यूके में दो दिन पहले महात्मा गांधी की प्रतिमा को टैविस्टॉक स्क्वायर में खालिस्तानी चरमपंथियों द्वारा क्षतिग्रस्त किया गया।

पीएम ने लद्दाख के लोगों से किया है धोखा

● राहुल बोले-गोलीबारी की न्यायिक जांच की जाए ● लेह में कर्फ्यू में ढील,इंटरनेट 3 अक्टूबर तक बंद

लेह (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को आरोप लगाते हुए कहा, पीएम मोदी ने लद्दाख के लोगों के साथ धोखा किया है। लेह में पुलिस गोलीबारी में 4 प्रदर्शनकारियों की मौत की निष्पक्ष न्यायिक जांच की जाए। इनमें कारगिल युद्ध में शामिल त्सावांग थारचिन भी शामिल थे। उन्होंने एक्स पर थारचिन के पिता का वीडियो पोस्ट किया। राहुल ने हिंदी में अपने पोस्ट में कहा- पिता की दर्द भरी आंखें एक सवाल पूछती हैं, क्या आज देश सेवा का यही ईनाम है। हिंसा और भय की राजनीति बंद करें। वहीं, गृह मंत्रालय ने मंगलवार को लद्दाख के लेह जिले में 3 अक्टूबर तक मोबाइल इंटरनेट और सार्वजनिक वाई-फाई सेवाओं को पूरी तरह से बंद करने का आदेश दिया। यहां सुबह 10 से शाम 7 बजे तक कर्फ्यू में ढील दी गई है। लद्दाख को राज्य का दर्जा और पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक समेत अन्य गिरफ्तार युवाओं की रिहाई की मांग तेज हो गई है। करगिल डेमोक्रेटिक अलायंस ने कहा है कि लद्दाख में हालात सामान्य होने तक केंद्र की उच्च अधिकार प्राप्त कमेटी से बात नहीं करेंगे।

गृह मंत्रालय बोला-बातचीत को तैयार है केंद्र

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सोमवार रात को कहा कि केंद्र लद्दाख से जुड़े मामलों पर एलडीए और केडीए से किसी भी समय संवाद को तैयार है। गृह मंत्रालय ने भरोसा जताया कि बातचीत से सकारात्मक नतीजे मिलेंगे। एलडीए ने झड़पों और गिरफ्तारियों के विरोध में 6 अक्टूबर तक बातचीत से दूरी बनाई है और न्यायिक जांच और पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक की रिहाई की मांग की है। कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस (केडीए) ने कहा है कि सोनम वांगचुक की रिहाई तक वह केंद्र के साथ बातचीत में शामिल नहीं होगा। केडीए के सह अध्यक्ष असगर करबला ने कहा कि केंद्र लेह गोलीबारी की न्यायिक जांच का आदेश दे और सभी गिरफ्तार लोगों को रिहा करे। लद्दाख के सांसद मोहम्मद हनीफा ने कहा कि लद्दाख के लोग राष्ट्र-विरोधी के रूप में बताए किए जाने से नाराज हैं। लेह शहर में मंगलवार सुबह 10 बजे से कर्फ्यू में सात घंटे की ढील दी गई, इससे लोगों को राहत मिली। मंगलवार को सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक कर्फ्यू में ढील दी गई थी और बाद में इसे बढ़ा दिया गया।

भाजपा नेता विजय कुमार मल्होत्रा का निधन

93 साल के थे,दिल्ली के पहले बीजेपी अध्यक्ष

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा के सीनियर नेता विजय कुमार मल्होत्रा का मंगलवार सुबह 93 साल की उम्र में निधन हो गया। वे पिछले कुछ दिनों से दिल्ली एम्स में भर्ती थे। एम्स ने आज सुबह उनकी मौत की जानकारी दी। मल्होत्रा दिल्ली से 5 बार सांसद और दो बार के विधायक थे। वे 1980 में दिल्ली के पहले प्रदेश अध्यक्ष बने। उन्होंने 1999 के लोकसभा चुनावों में दक्षिण दिल्ली से कांग्रेस उम्मीदवार मनमोहन सिंह को हराया था। उनके पार्थिव शरीर को दिल्ली स्थित उनके आवास पर रखा गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता सहित भाजपा के कई बड़े नेता उन्हें श्रद्धांजलि देने पहुंचे।

फिलिस्तीन को 11 वर्षों में की 700 करोड़ की मदद!

इजरायली प्रतिबंध दरकिनार,भारत ने नहीं छोड़ा साथ

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने पिछले 11 वर्षों में फिलिस्तीन को लगभग 80 मिलियन डॉलर (करीब 700 करोड़ रुपये) की विकासात्मक सहायता दी है, जो इससे पहले के 65 वर्षों में दी गई मदद की लगभग दोगुनी है। भारतीय अधिकारियों के मुताबिक, यह सहायता मानवीय जरूरतों और विकास परियोजनाओं दोनों को ध्यान में रखते हुए दी गई है। भारत न केवल द्विपक्षीय रूप से बल्कि संयुक्त राष्ट्र राहत एवं कार्य एजेंसी के माध्यम से भी फिलिस्तीन को मदद करता रहा है, भले ही इस एजेंसी पर इजरायल ने प्रतिबंध लगा रखा हो। भारत हर साल 5 मिलियन डॉलर का योगदान देता है और 2020-21 से अब तक कुल 27.5 मिलियन डॉलर उपलब्ध करा चुका है। 2014 से अब तक फिलिस्तीन को

दी गई भारत की विकासात्मक सहायता (लगभग 80 मिलियन डॉलर) पिछले 65 वर्षों (करीब 42 मिलियन डॉलर) की तुलना में लगभग दोगुनी है। इसके अलावा 40 मिलियन डॉलर की परियोजनाएं पाइपलाइन में हैं। सरकार को कुछ आलोचना झेलनी पड़ी है, खासतौर पर इस साल जून में संयुक्त राष्ट्र महासभा में स्थायी और बिना शर्त युद्धविराम पर आए प्रस्ताव पर भारत के मतदान से परहेज करने को लेकर। हालांकि, भारत का मानना है कि उसकी समग्र स्थिति- विशेष रूप से दो-राष्ट्र समाधान के प्रति लंबे समय से प्रतिबद्धता बदली नहीं है। भारतीय अधिकारियों के अनुसार, बीते 10 वर्षों में इजरायल-फिलिस्तीन मुद्दों पर आए 175 प्रस्तावों में से किसी के खिलाफ भारत ने मतदान नहीं किया।

भोपाल के एकमात्र नौ देवी मंदिर में सतचंडी हवन

यहां मां भगवती 9 स्वरूपों में है विराजमान; 1986 में हुई थी प्रतिमा की स्थापना

भोपाल (नप्र)। मां वैष्णो धाम आदर्श नो दुर्गा मंदिर, भोपाल का एकमात्र नौ देवी मंदिर है, जहां मां भगवती अपने नौ स्वरूपों के साथ विराजमान हैं। इस साल यहां दुर्गा उत्सव का 50वां वर्ष मनाया जा रहा है। महाष्टमी पर मंदिर में वैदिक ब्राह्मणों द्वारा सतचंडी हवन सुबह से ही विधि-विधान के साथ शुरू हो गया है, जिसमें बड़ी संख्या में भक्त आस्था की आहुति दे रहे हैं।

मंदिर के व्यवस्थापक पंडित चंद्रशेखर तिवारी ने बताया कि यहां चारों नवरात्रि पर वैदिक ब्राह्मणों द्वारा शतचंडी पाठ कराया जाता है। भक्त अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए ज्योत प्रज्वलित करवाते हैं। अविवाहित कन्याएं वर प्राप्ति के लिए मां भगवती से प्रार्थना करती हैं, वहीं नवविवाहित दंपत्ति मां की गोद भरकर सुख-समृद्धि और वंश वृद्धि की कामना करते हैं।मंदिर के इतिहास पर नजर डालें तो 1976 से यहां दुर्गा उत्सव का आयोजन शुरू हुआ था। मां भगवती की डेढ़ फीट की प्रतिमा

की स्थापना 1986 में एक छोटी-सी मड़िया में हुई थी। उस समय यह मंदिर 'आदर्श नौ दुर्गा मंदिर' के नाम से जाना जाता था।

बाद में 1998 में शारदीय नवरात्रि के दौरान नौ देवियों की प्राण-प्रतिष्ठा की गई और मंदिर का नाम 'आदर्श नौ दुर्गा मंदिर' रखा गया। 2014 में मंदिर का जीर्णोद्धार कर अलग-अलग देवी-देवताओं की स्थापना की गई।वर्तमान में मंदिर परिसर में लक्ष्मी-नारायण, राधा-कृष्ण, राम दरबार, भवानी-शंकर, खाटू श्याम जी और हनुमान जी महाराज के पांच-पांच फीट के भव्य स्वरूप भी विराजमान हैं।

मंदिर का शिखर 75 फीट ऊंचा है, जिस पर स्वर्ण कलश स्थापित है। अब यह मंदिर 'मां वैष्णो धाम आदर्श नो दुर्गा मंदिर और बाबा खाटू श्याम मंदिर' के नाम से प्रसिद्ध है।

इंदौर कांग्रेस अध्यक्ष के बयान पर कांग्रेस में विवाद

कोई ताकत दिग्विजय सिंह को कहीं जाने से रोक नहीं सकती: पीसी शर्मा

भोपाल (नप्र)। इंदौर के शीतला माता मंदिर इलाके में धर्म विशेष के कर्मचारियों को दुकानों से हटाए जाने और दुकानें खाली कराए जाने को लेकर कांग्रेस में ही घमासान मचा हुआ है। इन दुकानदारों और हटाए गए कर्मचारियों से शनिवार को पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह मुलाकात करने पहुंचे थे।

पुलिस ने उन्हें शीतला माता मंदिर नहीं जाने दिया। यहां उनके आने का विरोध भी हुआ। इसके बाद इंदौर कांग्रेस के शहर अध्यक्ष चिंटू चौकसे ने दिग्विजय के दौरे को लेकर आपत्ति जताई। रविवार को कांग्रेस की जिला स्तरीय समन्वय बैठक में कांग्रेस शहर अध्यक्ष चिंटू चौकसे ने कहा था- भोपाल और बाहर से नेता आते हैं और बिना कोई सूचना के अपने स्तर पर आयोजन रख लेते हैं।

पूर्व मंत्री बोले- कोई ताकत नहीं रोक सकती

इंदौर शहर अध्यक्ष के इस बयान पर पूर्व मंत्री और कांग्रेस के सीनियर लीडर पीसी शर्मा ने कहा- दिग्विजय सिंह पूर्व मुख्यमंत्री हैं। राज्यसभा के सदस्य हैं। वे एआईसीसी में तमाम पदों पर रहे हैं। वे इंदौर में शीतला माता के दर्शन करने गए थे वहां उनको रोका गया। कुछ लोग समाज में विभाजन करना चाहते थे। उनके विरोध में दिग्विजय सिंह गए थे।

चिंटू बोले- बैठक की बात बाहर आनी ही नहीं थी

इधर, समन्वय समिति की बैठक में दिए गए बयान पर मीडिया ने फोन पर इंदौर शहर कांग्रेस अध्यक्ष चिंटू चौकसे से पूछा तो उन्होंने सिर्फ इतना कहा- अब वो विषय समाप्त हो गया है। वो तो समन्वय समिति की बात थी। वो बात तो बाहर आनी ही नहीं थी। वो इश्यू खत्म हो गया।

संगठन प्रभारी बोले- बड़े नेताओं को लेकर नियम नहीं

इंदौर शहर अध्यक्ष द्वारा बड़े नेताओं के बिना परमिशन लिए दौरों को लेकर कही गई बात पर मीडिया ने कांग्रेस के संगठन प्रभारी संजय कामले से पूछा तो उन्होंने कहा- उन्होंने जो बयान दिया है उसकी किसी ने अधिकारिक तौर पर कोई शिकायत नहीं की? यदि शिकायत आती तो आगे फिर कार्रवाई करेंगे। वैसे तो सभी बड़े नेता अपने कार्यक्रम जारी करते ही हैं। कमलनाथ, दिग्विजय सिंह, अरूण यादव, कमलेश्वर पटेल सबके कार्यक्रम ऑफिशियली जारी होते ही हैं। कहीं जाते हैं तो ये लोग फोन लगाकर चर्चा करते ही हैं। कभी-कभार सौ में से एक बार ऐसा होता है जिसकी वजह से अचानक किसी का कार्यक्रम बन जाता है। तो फिर जिलाध्यक्ष का दायित्व है कि ये खुद बातचीत करके मिलें। समन्वय की सारी जिम्मेदारी जिलाध्यक्ष की होती है।

कांग्रेस और संविधान की एक ही नीति है-जीतू

पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने इंदौर की घटना पर कहा कि कांग्रेस का दायित्व है वो किसी समाज का हो हिन्दू मुस्लिम सिख हो या ईसाई हो। वो काम कहां कैसे करेगा उनको रोकने वाले देशद्रोही हैं। इसके विरोध में मैं खुद भी गया था दिग्विजय सिंह भी गए थे। पूरी कांग्रेस ने एक दिन बातें की। हम रेवेन्यु कमिश्नर से मिले थे। दिग्विजय सिंह थाने गए थे। कांग्रेस और संविधान की एक ही नीति है संविधान के अनुसार नागरिकों के जो अधिकार हैं हम उनकी रक्षा करेंगे।प्रशासन जिस तरीके का रवैया पूरे घटनाक्रम में अपना रहा है वो बीजेपी के नौकर बन गए हैं। वो तीन साल बाद अपना हिसाब खुद कर लें। वहां का कलेक्टर, कमिश्नर जो वहां के एसपी थानेदार लिख लें कि अगर आपने संविधान की भावना के विरोध में काम किया तो तीन साल में आपकी सीआर आपको लिखना है। अभी तक गौड़ के बेटे को गिरफ्तार क्यों नहीं किया गया? उसने इस तरह का घटनाक्रम किया जिससे वैमनस्यता पैदा हो। जितना बड़ा क्राइम उसका है उससे बड़ा क्राइम प्रशासन का है।

राज्यपाल ने प्रो. मिलिन्द दत्तात्रेय दाण्डेकर को कुलगुरू नियुक्त किया

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय भोपाल के होंगे कुलगुरू

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री मंगुभाई पटेल ने मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय भोपाल का कुलगुरू प्रो. मिलिन्द दत्तात्रेय दाण्डेकर को नियुक्त किया है। श्री गोविन्दराम सेकसरिया प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान, इंदौर (म.प्र.) के इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. मिलिन्द दत्तात्रेय दाण्डेकर को कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से 04 वर्ष की कालावधि या 70 वर्ष की आयु जो भी पूर्वतर हो, के लिए कुलगुरु नियुक्त किया गया है।जारी आदेश के अनुसार इनकी सेवा शर्तें एवं निबंधन विश्वविद्यालय के परिनियम- 1 ए के अनुसार शासित होंगी।

भोपाल आरटीओ में फेसलेस सेवाओं का होगा विस्तारीकरण

मंत्री उदय प्रताप सिंह करेंगे लोकार्पण, हेलमेट भी बांटे जाएंगे

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश परिवहन विभाग फेसलेस सेवाओं के विस्तारीकरण का आयोजन आज क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय कोकता भोपाल में कर रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री उदय प्रताप सिंह होंगे। कार्यक्रम के दौरान परिवहन आयुक्त, सचिव परिवहन विभाग उद्बोधन देंगे। इस मौके पर हेलमेट पुरस्कार भी वितरित किए जाएंगे। फेसलेस सेवाओं पर आधारित फिल्म का प्रदर्शन किया जाएगा, साथ ही मंत्री उदय प्रताप सिंह फेसलेस सेवाओं के विस्तारीकरण का लोकार्पण करेंगे।

मुख्यमंत्री करेंगे राज्य स्तरीय वन्यजीव सप्ताह का शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव बुधवार 1 अक्टूबर को सुबह 10:30 बजे वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू के विहार वीथिका में राज्य स्तरीय वन्यजीव सप्ताह का शुभारंभ करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव इस अवसर पर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के पर्यटक वाहनों का लोकार्पण और भारत के वन्यजीव, 'उनका रहवास एवं आपसी संचार' विषय पर केन्द्रित फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन कर वन्यजीव संरक्षण पुरस्कार वितरित भी करेंगे।कार्यक्रम में वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री श्री दिलीप सिंह अहिरवार, अपर मुख्य सचिव वन श्री अशोक बर्णवाल और प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री व्हीएन अंबाडे उपस्थित रहेंगे। गुरूवार 2 अक्टूबर को पक्षी अवलोकन, जन जागरूकता के लिये सृजनात्मकता कार्यशाला, महाविद्यालयीन विद्यार्थी के लिये वाद-विवाद प्रतियोगिता और विद्यालयीन विद्यार्थी के लिये तात्कालिक कहानी प्रतियोगिता होगी। शुक्रवार 3 अक्टूबर को तितली अवलोकन, खजाने की खोज और मेंहदी /पॉम पेंटिंग प्रतियोगिता होगी। शनिवार 4 अक्टूबर को विशेष वंचित वर्ग/दिव्यांग बच्चों के लिये पक्षी अवलोकन, फोटोग्राफी, रंगोली और विद्यालयीन/महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं के लिये युवा संसद आयोजित की जायेगी। रविवार 5 अक्टूबर रन फॉर वाइल्ड लाइफ और शिक्षक वाद-विवाद प्रतियोगिता, सोमवार 6 अक्टूबर सभी के लिये पक्षी अवलोकन, रेस्क्यू, वन्यप्राणी संरक्षण तथा अनुश्रवण उपयोग वाले उपकरणों से संबंधित कार्यशाला, वाइल्ड लाइफ एवं नेचर एक्सपो, वाद-विवाद प्रतियोगिता, वॉक थ्रू क्विज कम एग्जिविशन और मंगलवार 7 अक्टूबर को टोडलर वॉक एवं फेस पेंटिंग प्रतियोगिता एवं पुरस्कार वितरण के साथ समापन समारोह होगा।

मुख्यमंत्री ने श्री विजय मल्होत्रा के निधन पर दु :ख व्यक्त किया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारतीय जनता पार्टी दिल्ली के प्रदेश अध्यक्ष रहे, वरिष्ठ नेता श्री विजय कुमार मल्होत्रा के निधन पर दुःख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि संगठन की नींव को मजबूत करने में समर्पित मल्होत्रा जी का सम्पूर्ण जीवन, असंख्य कार्यकर्ताओं को प्रेरित करता रहेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान और परिजन को यह गहन दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

सीएम ने पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री सिंधिया की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पूर्व केंद्रीय मंत्री श्रद्धेय माधवराव सिंधिया की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि श्रद्धेय माधवराव सिंधिया ने जन-कल्याण और विकास को सदैव प्राथमिकता दी। राष्ट्रहित को लेकर उनके विचार हमें सदैव प्रेरित करते रहेंगे।

आज से नया सिस्टम, दशहरे पर बारिश का अलर्ट

एमपी में अगले 4 दिन हल्की बरसात का अनुमान, तेज हवा चलेगी

भोपाल (नप्र)। विदाई के बीच इस सप्ताह मध्यप्रदेश में मानसूनी बारिश की एक और झड़ी लगेगी। मौसम विभाग के अनुसार, 1 अक्टूबर से नया सिस्टम एक्टिव हो रहा है। इससे दशहरे के दिन भी कई जिलों में बारिश हो सकती है। दक्षिणी हिस्से में ज्यादा असर रहेगा। फिलहाल हल्की बारिश का अलर्ट है

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, अगले 4 दिन तक प्रदेश में हल्की बारिश होने का अनुमान है। गरज-चमक और तेज हवा की स्थिति भी बनी रही। पांचवें दिन से तेज बारिश का दौर फिर से शुरू हो सकता है। इससे पहले सोमवार को भी बारिश का दौर जारी रहा। ग्वालियर से मानसून लौट गया है, लेकिन सोमवार को यहां 9 घंटे में सवा इंच पानी बरस गया। भोपाल, दतिया, खरगोन, बड़वानी, नर्मदापुरम, मंडला, सागर में भी हल्की बारिश दर्ज की गई।

बड़वानी जिला मुख्यालय से 11 किलोमीटर दूर तलवाड़ा बुजुर्ग गांव के खेतों में बारिश का पानी घुस गया। स्थानीय किसान राकेश मुकाती ने कहा- तीन हेक्टेयर खेत में लगी भिंडी और मक्के की फसल खराब हो गई है। करीब 80 हजार रुपए का नुकसान हुआ। वहीं, खरगोन में नमी की वजह से कपास की गुणवत्ता प्रभावित हुई है। मंडी में नीलामी एक सप्ताह के लिए रोक दी गई है। किसान अपने घरों में तो जिनिंग संचालक फैक्ट्री परिसर में कपास सुखा रहे हैं। केके फायबर्स के संचालक प्रितेश अग्रवाल ने कहा- जिनिंग फैक्ट्री में सूखने के लिए रखा 700 क्विंटल कपास गीला होकर बह गया। बारिश के कारण किसान खेतों से कपास की चुनाई नहीं करा पा रहे हैं। गीला कपास पौधों से टूटकर गिर रहा है।

एक सप्ताह बाद से विदाई शुरू होगी-नया सिस्टम बनने

की वजह से प्रदेश में मानसून की विदाई फिलहाल नहीं होगी। एक सप्ताह के बाद मानसून लौटने लगेगा। बता दें कि अब तक प्रदेश के 12 जिलों से मानसून विदा हो चुका है। इनमें ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, आगर-मालवा, नीमच, मंदसौर और रतलाम भी शामिल हैं। राजगढ़ और अशोकनगर के कुछ हिस्से से मानसून विदा हुआ है। मौसम विभाग की माने तो मानसून की वापसी के लिए अभी परिस्थिति अनुकूल नहीं है।बता दें कि इस साल मानसून ने मध्यप्रदेश में 16 जून को दस्तक दी थी। समय से एक दिन बाद मानसून प्रदेश में एंटर हुआ था। मौसम विभाग के अनुसार, 6 अक्टूबर तक प्रदेश के सभी जिलों से मानसून विदा हो जाता है, लेकिन नया सिस्टम बनने से विदाई की तारीख आगे भी बढ़ सकती है।

अब तक 122 प्रतिशत बारिश-बता दें, प्रदेश में 16 जून को मानसून ने आमद दी थी। तब से अब तक औसत 45.1 इंच बारिश हो चुकी है। अब तक 37.3 इंच पानी गिरना था।

इंदौर-मुंबई तेजस तीसरी बार एक्सटेंड हुई

29 नवंबर तक संचालित की जाएगी एमपी की पहली तेजस ट्रेन

इंदौर (नप्र)। इंदौर से संचालित हो रही मध्य प्रदेश की पहली तेजस सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन को यात्रियों की मांग और सुविधा को देखते हुए तीसरी बार एक्सटेंड किया गया है। यह ट्रेन अब 29 नवंबर तक संचालित होगी। रेलवे सूत्रों ने बताया कि ट्रेन पूर्व निर्धारित मार्ग, ठहराव और कोच संरचना के अनुसार ही संचालित होगी। विस्तारित फेरों की बुकिंग शुरू हो चुकी है। इस विस्तार से यात्रियों को इंदौर और मुंबई के बीच यात्रा करने में और अधिक सुविधा मिल सकेगी।रेलवे सूत्रों अनुसार, मुंबई सेंट्रल से इंदौर आने वाली तेजस स्पेशल ट्रेन का अंतिम फेरा अब 28 नवंबर तक चलेगा। यह ट्रेन मुंबई से हर सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को रवाना होगी। वहीं, इंदौर से मुंबई सेंट्रल के लिए तेजस स्पेशल ट्रेन का अंतिम फेरा अब 29 नवंबर तक किया गया है। यह ट्रेन इंदौर से हर मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को चलेगी। इस ट्रेन को एक्सटेंड करने को लेकर अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई हैं।

बिना वजह होने वाले कमर दर्द का इलाज मिला

एम्स की टीएमएस लैब में खोजा इलाज डॉक्टर ने जर्मनी में दिया प्रेजेंटेशन

भोपाल (नप्र)। ना चोट लगी हो और ना ही कोई हड्डी या मांसपेशियों से जुड़ी बीमारी हो, फिर भी कई लोग कमर के तेज दर्द से परेशान रहते हैं। यह दर्द उनके जीवन पर सीधा असर डालता है। अब तक ऐसे मरीजों के लिए दर्दनिवारक गोलियां, पेन रिलीफ स्प्रे और ट्यूब या सर्जरी ही विकल्प थे। लेकिन एम्स भोपाल के फिजियोलॉजी विभाग के डॉक्टरों ने बिना सर्जरी और बिना दवा के ही इसका समाधान खोज लिया है। यह खोज एम्स भोपाल की ट्रांसक्रैनियल मैग्नेटिक स्टिमुलेशन (टीएमएस) लैब में हुई है, जिसे जर्मनी में आयोजित इंटरनेशनल यूनियन ऑफ फिजियोलॉजिकल साइंसेज

(आईयूपीएस 2025) कांग्रेस में प्रस्तुत किया गया।

मैग्नेटिक स्टीमुलेशन पर आधारित तकनीक-फिजियोलॉजी विभाग के प्रमुख प्रो. (डॉ.) संतोष वाकोड़े ने बताया कि इफेक्ट ऑफ रेपेटिटिव ट्रांसक्रैनियल मैग्नेटिक स्टीमुलेशन इन पेशेंट्स विद लो बैक पेन एक कारगर तकनीक है।

हाजी मोहम्मद हारून लगातार चौथी बार निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए

जमीयत उलमा एमपी की कार्यकारिणी समिति की चुनावी बैठक सम्पन्न

भोपाल (नप्र)। जमीयत उलमा मध्यप्रदेश की कार्यकारिणी समिति की चुनावी बैठक मंगलवार को राजधानी भोपाल में हुई। बैठक में सर्वसम्मति से हाजी मोहम्मद हारून को एक बार फिर संगठन का निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। यह लगातार चौथी बार है जब उन्होंने यह पद संभाला है।

जमीयत के मीडिया प्रभारी हाजी इमरान ने बताया कि प्रांतीय चुनाव दिल्ली मुख्यालय से आए केंद्रीय पर्यवेक्षकों की देखरेख में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में प्रदेशभर से कार्यकारिणी सदस्य मौजूद रहे। चुनाव प्रक्रिया में पर्यवेक्षक के तौर पर जमीयत उलमा के कई वरिष्ठ पदाधिकारी मौजूद रहे। इनमें जनाब कारी मोहम्मद यामीन (नाज़िम-ए-आला, पश्चिमी यूपी), जनाब अतीकुर्रहमान कुरैशी (संयोजक, गुजरात), मौलाना अमीनुल हक़ अब्दुल्ला उसामा (उपाध्यक्ष, उत्तरप्रदेश), मौलाना अब्दुल जब्बार पाशा और मौलाना मोहम्मद अज़हरुद्दीन शामिल रहे।

उपाध्यक्ष और कोषाध्यक्ष का भी हुआ चुनाव-सभा में चार उपाध्यक्ष और एक कोषाध्यक्ष का भी चयन किया गया। इनमें मुफ्ती आजम अब्दुर्रहीम कासमी (भोपाल), मौलाना हाफिज तैय्यब खरगोन (खरगोन), सुहैल मिर्जा एडवोकेट (आष्टा) और मुनीर अहमद (इंदौर) उपाध्यक्ष चुने गए। वहीं, डॉ. मेहरुल हसन को प्रांतीय कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने चौथी बार अध्यक्ष चुने जाने के बाद हाजी मोहम्मद हारून ने सभी सदस्यों और पदाधिकारियों का आभार जताया। उन्होंने कहा, कोई भी पद नई जिम्मेदारियों के साथ आता है, जिन्हें हमें ईमानदारी और दृढ़ संकल्प से निभाना चाहिए।

17 सरकारी नर्सिंग कॉलेजों को नहीं मिली मान्यता

सिर्फ 515 बीएससी नर्सिंग सीटें, बीएमएचआरसी भी खाली हाथ, 60 हजार कैंडिडेट दौड़ में

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के 17 सरकारी नर्सिंग कॉलेजों को इस साल मान्यता नहीं मिली है। साल 2025 में बीएससी नर्सिंग करने वाले छात्रों के पास केवल 4 सरकारी नर्सिंग कॉलेजों के विकल्प हैं। जबकि आवेदन 16 पुराने समेत कुल 21 सरकारी नर्सिंग कॉलेजों ने किया था।

यह छात्रों के लिए बड़ा झटका है, क्योंकि बीते साल 1340 सरकारी बीएससी नर्सिंग सीटें थीं, जो इस साल घटकर सिर्फ 515 रह गई हैं। यानी, नए सत्र में सरकारी कॉलेजों में 825 सीटें कम हुई हैं। जबकि, प्री-नर्सिंग सिलेक्शन टेस्ट और जनरल नर्सिंग मिडवाइफरी ट्रेनिंग सिलेक्शन टेस्ट का आयोजन 24 से 27 जून 2025 तक हुआ था।78,157 अभ्यर्थियों को प्रवेश पत्र जारी किए गए थे। जिनमें से 60,707 उपस्थित हुए थे। इन कैंडिडेट्स को सरकारी नर्सिंग कॉलेज में प्रवेश मिलने की संभावना पहले के मुकाबले आधी से भी कम हो गई है। अधिकारियों का कहना है कि इसके पीछे नियमों की कड़ाई कारण है। सबसे हैरानी की बात यह है कि इस बार राजधानी के भोपाल मेमोरियल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर तक को मान्यता नहीं मिली।

188 निजी कॉलेजों को मिली मान्यता

साल 2025 में छात्रों के लिए निजी नर्सिंग कॉलेज ही बड़ा विकल्प बने हैं। इस साल 188 निजी बीएससी नर्सिंग कॉलेजों को मान्यता दी गई है। जिनमें कुल 10,390 सीटें उपलब्ध होंगी। वहीं, जनरल नर्सिंग मिडवाइफरी कोर्स के लिए 231 निजी कॉलेजों को मान्यता दी गई है। जिनमें 10,838 सीटें है।

इन चार सरकारी कॉलेजों को मिली मान्यता

गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ नर्सिंग, जीएमसी भोपाल
गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ नर्सिंग, इंदौर
गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ नर्सिंग, जीएम हॉस्पिटल रीवा
गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ नर्सिंग, उज्जैन

पहले इन 16 कॉलेजों के पास थी मान्यता

नर्सिंग स्कूल, सिविल अस्पताल सिवनी
शासकीय नर्सिंग कॉलेज, सिवनी
शासकीय नर्सिंग कॉलेज, उज्जैन
शासकीय जीएनएम स्कूल, राजगढ़
शासकीय जीएनएम स्कूल, झाबुआ
शासकीय रानी दुर्गावती नर्सिंग कॉलेज, जबलपुर
शासकीय नर्सिंग कॉलेज, इंदौर
शासकीय नर्सिंग कॉलेज, विदिशा
शासकीय जीएनएम स्कूल, रायसेन
शासकीय जीएनएम प्रशिक्षण केंद्र, देवास
शासकीय नर्सिंग कॉलेज, जीएम अस्पताल, रीवा
नर्सिंग स्कूल, मुख्य अस्पताल दतिया
शासकीय जीएनएम स्कूल, सतना
भोपाल मेमोरियल अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र, भोपाल
शासकीय नर्सिंग कॉलेज, जीएमसी भोपाल
शासकीय नर्सिंग कॉलेज, जेए अस्पताल, ग्वालियर
शासकीय नर्सिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज जबलपुर

393 कॉलेजों ने इस साल किया आवेदन

2025-26 सत्र के लिए कुल 33 नए नर्सिंग कॉलेज और 360 पुराने कॉलेजों ने नवीनीकरण के लिए आवेदन किया था। इनमें लगभग 21 शासकीय कॉलेज शामिल थे। इसके उलट निजी कॉलेजों के मामले में बड़ी संख्या में अनुमति दी गई। जीएनएम नर्सिंग के 231 और बीएससी नर्सिंग के 188 निजी कॉलेजों को मान्यता मिल गई।

एनएसयूआई ने निजी कॉलेजों की मान्यता पर उठाए सवाल

एनएसयूआई ने इस फैसले पर सवाल उठाए हैं। उनका आरोप है कि कई निजी कॉलेज नियमों का पालन नहीं कर रहे और फर्जी फैकल्टी नियुक्त कर संचालन कर रहे हैं। एनएसयूआई के प्रदेश उपाध्यक्ष रवि परमार ने कहा कि शासकीय और निजी कॉलेजों की फैकल्टी व अन्य गंभीर अनियमितताओं को लेकर नर्सिंग काउंसिल को विस्तृत शिकायतें दी गई थीं। हैरानी की बात है कि शासकीय कॉलेजों की मान्यता रोक दी गई, जबकि निजी कॉलेजों को शिकायतों के बावजूद अनुमति दे दी गई। उन्होंने कहा कि जिन कॉलेजों की फैकल्टी सिर्फ कागजों पर है, उन्हें भी मान्यता दे दी गई, जिसकी शिकायत वे सीबीआई और हाईकोर्ट से करेंगे।

'फूल तुम्हें भेजा है खत में' मैसेज वाले प्रिंसिपल सस्पेंड

शिक्षिका को भेजा था आई लव वाला मैसेज टीचर्स बोले- प्राचार्य कक्ष जाने में असहजता होती है

नर्मदापुरम (नप्र)। नर्मदापुरम में अधेड़ प्राचार्य ने महिला टीचर को आई लव मैसेज भेजा। उसने हिंदी फिल्म का गाना- 'फूल तुम्हें भेजा है खत में' लिखकर महिला टीचर से जवाब हां या नहीं में मांगा था। किसी को नहीं बताने की कसम भी दी।

टीचर ने प्राचार्य को पिता समान बताया तो उसने प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। महिला ने इसकी शिकायत जिला शिक्षा अधिकारी से की, जिसके बाद जांच टीम स्कूल पहुंची। जांच में पाया गया की 8 महिला शिक्षक ऐसी है जो प्राचार्य की प्रताड़ना से प्रताड़ित थीं। मंगलवार को नर्मदापुरम संभागायुक्त कृष्णगोपाल तिवारी उन्हें सस्पेंड कर दिया गया। निलंबन के दौरान वह जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में काम करेंगे। इससे पहले मामला सामने आने के बाद प्राचार्य चिकित्सा अवकाश पर चले गए थे। सोमवार को उन्होंने ड्यूटी जॉइन कर ली थी।

टीम नर्मदापुरम जिले के पिपरिया स्थित पीएम श्री हाईस्कूल हथवास पहुंची। यहां महिला टीचर को वॉट्सएप पर मैसेज भेजने वाले प्राचार्य सुरेश श्रीवास्तव के बारे में बात की। टीचर्स ने कहा- महिला को प्रताड़ित और शोषित करने का प्राचार्य का यह कोई पहला मामला नहीं है।

पहले भी महिला टीचर को वे प्रताड़ित कर चुके हैं। एक टीचर ने तो उनकी पत्नी तक को शिकायत की थी, हालांकि ऊंची पहुंच होने के कारण कुछ हुआ नहीं।

प्राचार्य के बात करने का तरीका भी ठीक नहीं है। वे छात्र और जूनियर्स के सामने ही सीनियर टीचर की बेइज्जती करते हैं। प्राइमरी और मिडिल स्कूल के शिक्षकों पर हाईस्कूल के विद्यार्थियों को पढ़ाने का दबाव बनाते थे।

बात नहीं सुनने पर वॉट्सएप पर स्कूल के ग्रुप व पर्सनल मैसेज कर नीचा दिखाने का काम करते हैं। वे टॉर्चर करने का कोई मौका नहीं छोड़ते। वे शिक्षा मंत्री की धौंस देते हैं, कहते हैं ट्रांसफर करवा दूंगा।

संपादकीय

जाति रैली पर रोक के मायने

देश में लगभग सभी पार्टियां जब जातियों की राजनीति कर रही हों, तब उत्तर प्रदेश में योगी सरकार द्वारा जाति आधारित रैलियों पर रोक लगाया जाने के सियासी निहितार्थ तलाशे जा रहे हैं। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि उत्तर प्रदेश की राजनीति में जाति एक अहम फैक्टर है और इसी से चुनावी समीकरण भी तय होते हैं। प्रकट तौर पर योगी सरकार ने इस आदेश के पीछे इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले की आड़ ली है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा हाल में जारी आदेश के अनुसार राज्य में राजनीतिक उद्देश्यों से आयोजित जाति आधारित रैलियां समाज में जातीय संघर्ष को बढ़ावा देती हैं। ये लोक व्यवस्था और राष्ट्रीय एकता के विपरीत है। इन पर राज्य में पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। इसके पूर्व इलाहाबाद हाई कोर्ट ने 16 सितंबर को राज्य सरकार को आदेश दिया था कि पुलिस रिकॉर्ड और सार्वजनिक स्थलों पर जाति के उल्लेख पर रोक लगाई जाए। अदालत ने माना कि यह प्रथा भेदभाव को बढ़ावा देती है और संविधान की मूल भावना के ख़िलाफ़ है। हाई कोर्ट के निर्देशों के बाद जारी सरकारी आदेश में स्पष्ट किया गया कि एफ़आईआर और गिरफ़्तारी मेमो में भी अभियुक्त की जाति नहीं लिखी जाएगी, बल्कि माता-पिता का नाम दर्ज किया जाएगा। हालांकि यह एससी और एसटी मामलों में प्रभावी नहीं होगा। इस आदेश के लागू होने के बाद किसी भी राजनीतिक दल के जाति आधारित रैलियों या सम्मेलनों पर रोक लग जाएगी। हालांकि इस आदेश के बाद सत्तारूढ़ एनडीए में विरोध के स्वर सुनाई देने लगे हैं। प्रदेश मे मंत्री और निषाद पार्टी के नेता संजय निषाद ने सरकार के इस फैसले की आलोचना करते हुए कहा कि सरकार को इस मसले पर पुनर्विचार करना चाहिए। निषाद ने कहा कि जिन जातियों का अभी तक उत्पीड़न होता रहा है, उनको लोकतांत्रिक तरीके से अपनी बात कहने का हक है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि राज्य में बीजेपी की सहयोगी निषाद पार्टी, सुहेल देव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) और अपना दल की राजनीति पर भी इस आदेश का कुछ असर हो सकता है। दूसरी तरफ कुछ राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस आदेश का लाभ बीजेपी को मिलेगा। क्योंकि बीजेपी ज़मीनी स्तर पर जातीय समीकरण साधती है। उदाहरण के लिए सुहेल देव के नाम पर बीजेपी ने प्रदेश की एक जाति के लोगों को अपने साथ जोड़ने का सफल अभियान चलाया, वहीं महाराजा बिजली पासी के नाम पर भी सफ़ल सियासी प्रयोग किया है। जातिगत रैलियों पर रोक के बारे में विपक्षी कांग्रेस का कहना है कि समता मूलक समाज के लिए ज़रूरी है कि जातियाँ समाप्त हों, लेकिन जातियों को छुपाकर जातिवाद ख़त्म नहीं होगा, बल्कि इससे वर्चस्ववादी जातिवाद और बढ़ेगा। क्या इससे राज्य में पिछड़ों का उत्पीड़न बंद हो जाएगा? क्या दलितों के ख़िलाफ़ हिंसा रुक जाएगी? क्या जाति-धर्म के नाम पर फ़र्ज़ी मुठभेड़ें बंद हो जाएँगी? समाजशास्त्रियों का कहना है कि भारतीय संविधान की भावना धर्म और जाति नहीं है। ऐसे में जातिगत सम्मेलन भारत के विकास में बाधक हैं। जबकि कुछ विश्लेषकों का मत है कि यूपी सरकार का काम हर मौके का राजनीतिक इस्तेमाल करने का ही है। उनका कहना है कि कोर्ट ने जाति को ख़त्म करने के लिए अंतरजातीय संस्थाएं बनाने पर जोर दिया है। वैसे यूपी में जातिवादी राजनीति में नया मोड़ पहले मंडल आंदोलन और उसके बाद पिछड़ों की समाजवादी पार्टी और दलितों की बहुजन समाज पार्टी के उत्थान से आया। उसके बाद जाति विशेष केन्द्रित पार्टियों का भी उदय हुआ, जो किसी न किसी गठबंधन का हिस्सा बनकर सत्ता का लाभ उठाते रहे हैं। हालांकि उन्होंने अपनी जातियों का कितना सामाजिक आर्थिक उत्थान किया, यह बड़ा सवाल है।

नजरिया

संजय सक्सेना
लेखक लखनऊ निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

'आई लव' से उपजी सियासत और चुनौतियां

'आई लव मोहम्मद' के पोस्टर्स के जवाब में खासकर धार्मिक व भाजपा समर्थक समूहों द्वारा 'आई लव महादेव' और 'आई लव महाकाल' के पोस्टर कई शहरों में सामने आए। इसी कड़ी में लखनऊ के चौराहों और सार्वजनिक स्थानों पर 'आई लव योगी आदित्यनाथ' और 'आई लव बुलडोजर' के होर्डिंग्स लगाए गए, जो सीएम योगी आदित्यनाथ एवं उनकी बुलडोजर एक्शन नीति का सख्त संदेश देते हैं। ये पोस्टर भाजपा युवा मोर्चा के नेताओं द्वारा एयरपोर्ट चौराहा, हजरतगंज, वीवीआईपी रोड जैसी प्रमुख जगहों पर लगाए गए।

उत्तर प्रदेश की राजनीति बीते कुछ दिनों से आई लव मोहम्मद विवाद के साथ आई लव महादेव,आई लव महाकाल, आई लव योगी आदित्यनान और आई लव बुलडोजर जैसे पोस्टर-होर्डिंग्स के उभार से चर्चा के केंद्र में है। यह पोस्टर-बाज़ी केवल दिखावटी सियासत नहीं, बल्कि प्रदेश की चुनावी, धार्मिक और सामाजिक पहचान की जटिलता को गहराई से उजागर कर रही है।विवाद की बड़ी वजह यह है कि आई लव मोहम्मद जैसे पोस्टर सामने क्यों आ रहे हैं जबकि इस्लाम में मोहम्मद साहब का चित्र या उन्हें किसी भी रूप में प्रदर्शित करना बुत परस्ती माना जाता है। यही वजह है मुस्लिम समाज भी इसको लेकर दो हिस्सों में बंटा हुआ नजर आ रहा है। एक धड़ा वह है जो इसे गलत और इस्लाम के विरूद्ध मानता है वहीं दूसरा वर्ग जो कहीं न कहीं राजनीति से भी प्रेरित है उसे इमसें कोई बुराई नजर नहीं आती है। यही कारण है कि यह मुद्दा धार्मिक जगत से निकलकर सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर भी चर्चाओं का केंद्र बन गया है।

विरोध करने वाले धर्मगुरूओं का तर्क है कि इस्लाम में पैग़ंबर मोहम्मद साहब के नाम के साथ किसी भी तरह के प्रदर्शन, नारेबाजी या पोस्टरबाजी को परंपरा के खिलाफ माना गया है। उनका कहना है कि मोहम्मद साहब को पूरी इंसानियत के लिए रहमतुल्लिल आलमीन कहा गया है और उनके प्रति प्रेम को दिल की गहराइयों में रखना ही सच्ची सुन्नत है। सार्वजनिक रूप से 'आई लव मोहम्मद' के पोस्टर निकालना या सोशल मीडिया पर इस तरह के अभियान चलाना कहीं न कहीं आस्था को प्रदर्शन का रूप दे देता है, जो शरीयत और इस्लामी तालीमात से मेल नहीं खाता। कई उलेमा का मानना है कि इस कदम से गैर-मुसलमानों के बीच यह संदेश जाएगा कि मुस्लिम समाज केवल नारे और पोस्टर की राजनीति कर रहा है। साथ ही कुछ धर्मगुरू यह भी आशंका जता रहे हैं कि इस तरह के अभियान आगे चलकर राजनीतिक दलों के लिए भी सियासी हथियार बन सकते हैं।

दूसरी ओर, अभियान का समर्थन करने वाले धर्मगुरू और सामाजिक कार्यकर्ता यह दलील देते हैं कि मौजूदा समय में इस्लाम और पैग़ंबर मोहम्मद साहब को लेकर वैश्विक स्तर पर कई तरह की गलतफहमियां फैलाई गई हैं। ऐसे में अगर कोई समुदाय प्रेम और मोहब्बत का पैगाम देकर यह बताना चाहता है कि पैग़ंबर की शिक्षा इंसानियत, भाईचारे और रहमत की है, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। इन धर्मगुरूओं के मुताबिक, यह प्रदर्शन अगर शांति और सौहार्द कायम करने की नीयत से किया जाए तो इसे विवाद की तरह नहीं देखा जाना चाहिए। समर्थन और विरोध के इस जंग में कई बड़े नाम सामने आए हैं। अहले सुन्नत से जुड़े कुछ प्रमुख मौलाना और सूफी संत इस अभियान का खुलकर साथ दे रहे हैं। उनका कहना है कि यह पैग़ंबर से मोहब्बत जाहिर करने का एक जमीनी तरीका है, जिससे युवाओं में भी सकारात्मक असर होगा। उनका यह भी तर्क है कि आज के दौर में सोशल मीडिया के जरिये नफरत के संदेश तेजी से फैलते हैं, तो क्यों न मोहब्बत का पैगाम भी उसी अंदाज में फैलाने की कोशिश की जाए। इसके उलट देवबंदी पंथ से जुड़े कई उलेमा और मजहबी रहनुमा इसे गैर-मुनासिब बता रहे हैं। उनका मानना है

कि पैग़ंबर से प्रेम का इजहार आचरण, पांच वक्त की नमाज, रोजे और अच्छे अख्लाक से होना चाहिए, न कि पोस्टर या बैनर पर लिखे नारों से। उनके अनुसार, मोहब्बत का दावा करने वाले लोग अगर अपने अमल में पैग़ंबर की तालीम को उतार लें, तो यह समाज और देश दोनों के लिए ज्यादा हितकारी होगा। इस बहस का असर यह हुआ है कि मुस्लिम समाज दो धड़ों में बंट गया है। स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि मस्जिदों और मदरसों में इस विषय पर अलग-अलग बयान दिए जा रहे हैं, जिससे आम लोग भी असमंजस की स्थिति में हैं कि किसको सही माना जाए। दिलचस्प बात यह है कि युवा वर्ग इस अभियान के प्रति अधिक उत्साहित दिख रहा है। कई जगहों पर कॉलेज और यूनिवर्सिटी के मुस्लिम छात्रों ने स्वयंसेवी तौर पर 'आई लव मोहम्मद' लिखे पोस्टर अपने आयोजनों और सोशल मीडिया पर साझा किए। वहीं बुजुर्ग आलिम वर्ग ने इस पर नाराजगी जताते हुए कहा कि नौजवानों को मूल तालीमात की ओर लौटने की जरूरत है, न कि सतही नारों की तरफ।

बहरहाल, बात आई लव मोहम्मद प्रकरण की बात की जाये तो इसका आगाज़ कानपुर और बरेली से हुआ, जब बारावफात और जुमे के मौके पर मस्जिदों और सार्वजनिक स्थानों पर 'आई लव मोहम्मद' के पोस्टर लगाए गए। मुस्लिम समुदाय ने इसे पैगंबर के प्रति सम्मान की सार्वजनिक अभिव्यक्ति बताया, लेकिन हिंदू संगठनों ने इसे नई परम्परा और भावनाओं को भड़काने वाला कदम मानकर विरोध जताया। प्रशासन को विरोध-प्रदर्शन, नारेबाज़ी, झड़प और पथराव को नियंत्रित करने के लिए लाठीचार्ज और गिरफ्तारियों तक पहुंचना पड़ा। यह मुद्दा कानपुर, बरेली, मऊ, सहारनपुर, लखनऊ समेत कई शहरों से होते हुए राष्ट्रीय स्तर पर फैल गया।

'आई लव मोहम्मद' के पोस्टर्स के जवाब में खासकर धार्मिक व भाजपा समर्थक समूहों द्वारा 'आई लव महादेव' और 'आई लव महाकाल' के पोस्टर कई शहरों में सामने आए। इसी कड़ी में लखनऊ के चौराहों और सार्वजनिक स्थानों पर 'आई लव योगी आदित्यनाथ' और 'आई लव बुलडोजर' के होर्डिंग्स लगाए गए, जो सीएम योगी आदित्यनाथ एवं उनकी बुलडोजर एक्शन नीति का सख्त संदेश देते हैं। ये पोस्टर भाजपा युवा मोर्चा के नेताओं द्वारा एयरपोर्ट चौराहा, हजरतगंज, वीवीआईपी रोड जैसी प्रमुख जगहों पर लगाए गए। इस अभियान में योगी आदित्यनाथ की इमेज को कानून-व्यवस्था के 'रक्षक' और अपराध के खिलाफ 'बुलडोजर एक्शन' से जोड़ा जा रहा है, जिससे हिंदू युवा वर्ग व भाजपा समर्थकों में बेहद लोकप्रियता मिल रही है।वर्तमान पोस्टर-होर्डिंग्स ट्रेंड चुनावी ध्रुवीकरण, पहचान की सियासत और संवादहीनता का प्रतीक बन गया है। मुख्यमंत्री योगी के पोस्टर, बुलडोजर की छवि और 'आई लव महादेव' जैसी टैगलाइन भाजपा के रणनीतिक ध्रुवीकरण के हथियार हैं, जिससे पार्टी हिंदू वोट बैंक और मध्यम वर्ग को मजबूती दे रही है। दूसरी ओर विपक्षी दल इस अभियान को बेरोजगारी, महंगाई और जनसमस्याओं से ध्यान हटाने का साधन मानते हैं तथा जनता को असल मुद्दों के बजाय भावनात्मक सवालों में उलझा देने की राजनीति करार देते हैं।इसके साथ ही, धार्मिक भावनाओं के खुले प्रदर्शन से साम्प्रदायिक तनाव बढ़ते हैं। समाज में वर्गीय, धार्मिक व सांस्कृतिक ध्रुवीकरण की स्थिति बन रही है, जिससे शांति व्यवस्था और प्रशासन को लगातार निपटना पड़ रहा है।

एक तरफ जहाँ ये अभियान हिंदू-मुस्लिम पहचान को सियासी मंच पर सामने लाते हैं तो दूसरी ओर कानून-व्यवस्था के लिए सवाल भी खड़े कर देते हैं। कई जगहों पर आम लोगों, युवाओं और महिलाओं का भी सार्वजनिक प्रदर्शन, झड़प और गिरफ्तारियों तक से माहौल तनावपूर्ण बना है।राज्य सरकार इन पोस्टर्स को सख्ती से नियंत्रित करने की कोशिश कर रही है, लेकिन सोशल मीडिया, प्रचार और विपक्षियों की प्रतिक्रियाओं से यह विवाद लगातार तूल पकड़ता जा रहा है।

कुल मिलाकर आई लव वाली ब्रांडिंग अब उत्तर प्रदेश की राजनीति में सिर्फ धार्मिक समर्थन का नहीं, बल्कि चुनावी रणनीति, जनभावनाओं की दिशा और राजनीतिक संवाद का शक्तिशाली औजार बन चुकी है। इससे सियासत अब विकास, रोजगार व जनकल्याण जैसे मुद्दों से हटकर पहचान, छवि और ध्रुवीकरण के इर्द-गिर्द घूमती दिखती है। साम्प्रदायिक तनाव, प्रशासनिक चुनौतियां और मुद्दों का भावनात्मकरण इस अभियान की बड़ी प्रवृत्ति बन चुके हैं।

गांधी जयंती

निलेश देसाई
लेखक गांधी विचार कार्यकर्ता हैं।

गांधी विचार- वैश्विक संकटों का समाधान

आमतौर पर महापुरुषों की जयंती पर हम उनके गुणगान तक सीमित रह जाते हैं। लेकिन यदि हम आज की वैश्विक चुनौतियों पर गंभीर नज़र डालें-चाहे अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध हो, जलवायु संकट हो या बढ़ते हिंसक संघर्ष-तो एक सच्चाई साफ़ है- गांधी विचारों को नज़रअंदाज करना संभव नहीं।

गांधी का दर्शन केवल स्वतंत्रता आंदोलन का औज़ार नहीं था, बल्कि मानवता के लिए एक स्थायी और नैतिक जीवन पद्धति का मार्ग था। आज जब दुनिया उनके सिद्धांतों से प्रेरणा ले रही है, विडंबना यह है कि हमारे अपने समाज में उन्हें विवादों में उलझाने की कोशिशें हो रही हैं। यह समय हमें याद दिलाता है कि गांधी को केवल इतिहास के नायक के रूप में नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की राह दिखाने वाली चेतना के रूप में अपनाना होगा।

अमेरिकी टैरिफ और स्वदेशी उत्पादन

आज अमेरिका और चीन के बीच टैरिफ युद्ध का असर पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर हो रहा है। अमेरिका चीनी वस्तुओं पर शुल्क लगाकर अपने उद्योगों को बचाने की कोशिश कर रहा है, जिससे वैश्विक व्यापार अस्थिर हो गया है। गांधी ने इस समस्या का समाधान बहुत पहले सुझा दिया था-'स्वदेशी उत्पादन और स्थानीय उपभोग।'

उनका मानना था कि यदि हम अपने ही गांवों में आवश्यक वस्तुएँ तैयार करेंगे, तो न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता आएगी बल्कि सामाजिक संतुलन भी बनेगा। यही कारण है कि आज अमेरिका 'बाय अमेरिकन' और भारत 'वोकल फॉर लोकल' जैसे अभियानों की ओर बढ़ रहे हैं। कोविड-19 महामारी ने यह सच्चाई और उजागर कर दी कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर अत्यधिक निर्भरता असुरक्षा पैदा करती है। गांधी का स्वदेशी दर्शन इस संदर्भ में स्थायी मार्ग है।

जलवायु परिवर्तन और मिनिमलिज़्म

धरती जलवायु संकट की आग में झुलस रही है। कहीं बाढ़, कहीं सूखा, कहीं भीषण गर्मी और कहीं जंगलों में आग-मानव सभ्यता के लिए यह अस्तित्व का संकट बन चुका है। गांधी ने बहुत पहले चेताया था- 'पृथ्वी सभी की जरूरतें पूरी कर सकती है, लेकिन किसी एक के लालच को नहीं।'आज 'मिनिमलिज्म' और 'सस्टेनेबल लाइफस्टाइल' पर जो वैश्विक विमर्श हो रहा है, वह गांधी की जीवनशैली का आधुनिक रूप ही है। उन्होंने अपने जीवन को अति-सादगी और संयम पर आधारित रखा। केवल उतना ही उपभोग करना जितनी आवश्यकता हो-यह उनका व्यक्तिगत आचरण था। यूरोप में 'डाउनशिफ्टिंग मूवमेंट', अमेरिका में 'टाइनी हाउस मूवमेंट' और भारत में 'सस्टेनेबल फैशन' व 'ईको-फ्रेंडली जीवनशैली' इसी गांधीवादी सोच के विस्तार हैं।गांधी का 'ट्रस्टीशिप सिद्धांत'-जहाँ संसाधनों का उपयोग व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं, बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी माना जाता है-आज के कॉर्पोरेट जगत के 'ईएसजी' मानकों और जलवायु-नीतियों में स्पष्ट रूप से झलक रहा है।

पुन: उपयोग और रिसायकल

आज पूरी दुनिया कचरे के पहाड़ों से जूझ रही है। प्लास्टिक और इलेक्ट्रॉनिक कचरा धरती और समुद्र दोनों को विषाक्त बना रहे हैं। यूरोपीय संघ ने 2030 तक 100 प्रतिशत रिसायकल प्लास्टिक का लक्ष्य रखा है। भारत में 'स्वच्छ भारत अभियान' और 'जीरो वेस्ट' की पहलें चल रही हैं।

गांधी का जीवन इस संदर्भ में व्यवहारिक उदाहरण है। वे कपड़े को बार-बार सिलवाते, छोटे कागज़ तक बचाकर रखते और वस्तुओं को अधिकतम उपयोग में लाते। यह केवल मितव्ययिता नहीं थी, बल्कि संसाधनों के सम्मान का प्रतीक था। आज की 'सर्कुलर इकॉनॉमी' और 'जीरो वेस्ट मूवमेंट' को गांधी की इस जीवन दृष्टि से गहरा संबंध मिलता है।

हिंसक प्रतिरोध और अहिंसा का महत्व

यूक्रेन-रूस युद्ध, इस्राइल-फलस्तीन संघर्ष और अफ्रीका-एशिया के आंतरिक विद्रोह दुनिया की शांति को चुनौती दे रहे हैं। हिंसा का यह चक्र मानवता को गहरे संकट में डाल रहा है। गांधी का अहिंसा का दर्शन आज भी सबसे बड़ा समाधान है।उन्होंने कहा था- 'आँख के बदले आँख से पूरी दुनिया अंधी हो जाएगी।' नेल्सन मंडेला ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ अहिंसक संघर्ष से लोकतंत्र की नींव रखी। भारत में अन्ना हज़ारे का आंदोलन भी गांधी शैली का आधुनिक रूप था। आज जब संयुक्त राष्ट्र भी संवाद और वार्ता पर ज़ोर देता है, तो यह गांधी की अहिंसा की वैश्विक स्वीकार्यता को दर्शाता है।

समग्र दृष्टि- गांधी का भविष्य दर्शन

यदि इन तीनों मुद्दों को एक साथ देखें तो समाधान की दिशा स्पष्ट है

* आर्थिक अस्थिरता का उत्तर है स्वदेशी और स्थानीय उत्पादन।

*जलवायु संकट का उत्तर है सादगी और संयमित उपभोग।

*सामाजिक-राजनीतिक हिंसा का उत्तर है अहिंसा और संवाद।

गांधी ने जिन विचारों को 100 वर्ष पहले रखा था, वे आज की सबसे बड़ी चुनौतियों में मार्गदर्शन देते हैं। अंत में यही कहना चाहूँगा कि गांधी केवल इतिहास के अध्याय नहीं हैं, बल्कि वर्तमान और भविष्य का दर्शन भी हैं। उनका स्वदेशी, सादगी, पुनः उपयोग और अहिंसा का मार्ग ही मानवता को बचाने का वास्तविक उपाय है। आज जब अमेरिकी टैरिफ युद्ध, जलवायु परिवर्तन और हिंसा-युद्ध जैसे संकटों से पूरी दुनिया जूझ रही है, तब गांधी विचारों की प्रासंगिकता और भी गहरी हो जाती है। अगर हम वास्तव में समाधान की तलाश में हैं, तो गांधी को महिमा मंडित करने से आगे बढ़कर उनके विचारों को जीवन और नीतियों में उतारना होगा। तभी हम एक टिकाऊ, शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण विश्व का निर्माण कर पाएँगे।

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

बोझ नहीं, जीवन की धरोहर हैं बुजुर्ग

भारतीय संस्कृति में सदा से ही बड़ों के आदर-सम्मान की परम्परा रही है लेकिन आज दुनिया के अन्य देशों सहित हमारे देश में भी वृद्धजनों पर बढ़ते अत्याचारों की खबरें समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय बन गई हैं। अधिकांश परिवारों में वृद्ध जिस तरह की उपेक्षा झेलने को मजबूर हैं, उससे ज्यादा पीड़ादायक और क्या हो सकता है! समृद्ध परिवार होने के बावजूद घर के बुजुर्ग वृद्धाश्रमों में जीवनयापन करने को विवश हैं। बहुत से मामलों में बच्चे ही उन्हें बोझ मानकर वृद्धाश्रमों में छोड़ आते देते हैं। हालांकि यह उम्र का ऐसा पड़ाव होता है, जब उन्हें परिजनों के अपनेपन, प्यार और सम्मान की सर्वाधिक जरूरत होती है। एक व्यक्ति जिस घर-परिवार को बनाने में अपनी पूरी जिंदगी खपा देता है, वृद्धावस्था में जब उसी घर में उसे अवांछित वस्तु के रूप में देखा जाने लगता है तो लगता है जैसे उस घर में रहने वालों की इंसानियत और उनके संस्कार मर चुके हैं।

विश्वभर में ऐसे हालात को देखते हुए ही वृद्धजनों के लिए कुछ कल्याणकारी कदम उठाने की जरूरत महसूस हुई थी। इसीलिए वर्ष 1982 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने 'वृद्धावस्था को सुखी बनाइए' जैसा नारा देते हुए 'सबके लिए स्वास्थ्य' अभियान का शुरू किया था। वृद्धों के साथ होने वाले अन्याय, उपेक्षा और दुर्व्यवहार पर लगाम लगाने और वृद्धजनों के प्रति उदारता व उनकी देखभाल की जिम्मेदारी के अलावा उनकी समस्याओं के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र ने 14 दिसंबर 1990 को निर्णय लिया कि प्रतिवर्ष एक अक्तूबर का दिन दुनियाभर में 'अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस' के रूप में मनाया जाएगा। संयुक्त राष्ट्र की इस पहल के बाद एक अक्तूबर 1991 को पहली बार यह दिवस मनाया गया, जिसे 'अंतर्राष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस' के नाम से भी जाना जाता है। बुजुर्गों के प्रति वैसे तो सभी के हृदय में हर पल, हर दिन सम्मान का भाव होना चाहिए लेकिन दिल में छिपे इस सम्मान को व्यक्त करने के लिए औपचारिक तौर पर यह दिन निश्चित किया गया। 1991 में अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस की शुरूआत के बाद वर्ष 1999 को पहली बार 'बुजुर्ग वर्ष' के रूप में भी मनाया गया था। इस वर्ष 'अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस' 'स्थानीय और वैश्विक कार्रवाई को आगे बढ़ाने वाले वृद्धजन ~ हमारी आकांक्षाएं, हमारा कल्याण, हमारे अधिकार' विषय के साथ मनाया जा रहा है। यह विषय लचीले और समतामूलक समाजों के निर्माण, अंतर-पीढ़ीगत एकजुटता को बढ़ावा देने तथा वृद्ध लोगों के अधिकारों और कल्याण को नीति और कार्रवाई का केंद्र बनाने में वृद्धों की परिवर्तनकारी भूमिका पर जोर देता है।भारतीय समाज में सयुंक्त परिवार को हमेशा से अहमियत दी गई है लेकिन आज के बदलते परिवेश में छोटे और एकल परिवार की चाहत में संयुक्त परिवार की अवधारणा खत्म होती जा रही है। यही कारण है कि लोग अपने बुजुर्गों से दूर होते जा रहे हैं और नई पीढ़ी दादा-दादी, नाना-नानी के प्यार से वंचित होती जा रही है। एकल परिवार के बढ़ते चलन के कारण ही परिवारों में बुजुर्गों की उपेक्षा होने लगी है। न चाहते हुए भी बुजुर्ग अकेले रहने को मजबूर हैं। इसका एक गंभीर परिणाम यह देखने को मिला है कि बुजुर्गों के प्रति अपराध भी तेजी से बढ़े हैं। शहरों-महानगरों में आए दिन बुजुर्गों को निशाना बनाए जाने की खबरें दहला देती हैं। दूसरा गंभीर परिणाम यह कि बच्चों को बड़े-बुजुर्गों का सानिध्य नहीं मिलने के कारण उनके जीवन पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। एक सर्वे के अनुसार दादा-दादी या नाना-नानी के साथ रहने वाले बच्चों का विकास अकेले रहने वाले बच्चों की तुलना में कहीं ज्यादा अच्छा और मजबूत होता है और ऐसे बच्चों में आत्मविश्वास भी अधिक देखने को मिला है। आज पति-पत्नी दोनों ही कामकाजी हैं, ऐसे में बच्चे घर में अकेले रहते हैं और कम उम्र में ही उनमें अवसाद जैसी समस्याएं पनपने लगती हैं।

वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने हालांकि वर्ष 1999 में एक राष्ट्रीय नीति बनाई थी तथा उससे पहले वर्ष 2007 में माता-पिता और वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण विधेयक भी संसद में पारित किया गया था, जिसमें माता-पिता के भरण-पोषण, वृद्धाश्रमों की स्थापना, चिकित्सा सुविधा की व्यवस्था और वरिष्ठ नागरिकों के जीवन और सम्पत्ति की सुरक्षा का प्रावधान था लेकिन इसके बावजूद देशभर में वृद्धाश्रमों में बढ़ती संख्या इस तथ्य को इंगित करती है कि भारतीय समाज में वृद्धों को उपेक्षित किया जा रहा है। कुछ समय पहले 96 देशों में कराए गए एक सर्वे के बाद 'ग्लोबल एज वॉच इंडेक्स' जारी किया गया था। उस सूचकांक के मुताबिक करीब 44 फीसदी बुजुर्गों का मानना था कि उनके साथ सार्वजनिक स्थानों पर दुर्व्यवहार किया जाता है जबकि 53 फीसदी बुजुर्गों का कहना था कि समाज उनके साथ भेदभाव करता है। आर्थिक समस्या से जूझते वृद्धों के लिए लगभग सभी पश्चिमी देशों में पर्याप्त पेंशन की व्यवस्था है। भारत में भी वृद्धावस्था पेंशन की सुविधा है लेकिन उनके सामने स्वास्थ्य समस्याओं के अलावा अकेलेपन की जो समस्या है, उसका इलाज नहीं है।

यह अकेलापन वृद्धजनों को भीतर ही भीतर सालता रहता है। हालांकि 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के सभी वर्गों के लोगों को आयुष्मान भारत योजना में शामिल करने का निर्णय निश्चित रूप से वृद्धजनों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाएगा और इससे देश में करीब साढ़े चार करोड़ परिवारों को लाभ होने की उम्मीद है लेकिन बुजुर्गों के मामले में कई बार चिंताजनक स्थिति यह होती है कि बीमारी के समय में भी सांत्वना देने वाला उनका कोई अपना उनके पास नहीं होता। हालांकि आज कुछ ऐसी संस्थाएं हैं, जो एकाकी जीवन व्यतीत कर रहे वृद्धों के लिए निस्वार्थ भाव से काम कर रही हैं लेकिन ये संस्थाएं भी अपनों की महसूस होती कमी की भरपाई तो नहीं कर सकती। बहरहाल, वृद्धजनों को अपने परिवार में भरपूर मान-सम्मान मिले, इसके लिए सामाजिक जागरूकता जैसी पहल की सख्त दरकार है ताकि वृद्धों के प्रति परिजनों की सोच सकारात्मक होने से बुजुर्गों के लिए वृद्धाश्रम जैसे स्थानों की समाज में आवश्यकता ही महसूस नहीं हो।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सुरेश सौरभ
लेखक व्यंग्यकार हैं।

बुढ़ापे में डिग्री की खोज

उस दिन शर्मा जी मुंह लटकाए चले आए। मैंने पूछा-क्या बात है इतने उदास क्यों हो। वे बोले-कुछ नहीं बस यूं ही। जब मैंने काफी जोर दिया, तब उनके अंदर के दर्द का पूरा बांध एकदम भरभरा कर फूट पड़ा। बोले-जिंदगी भर नौकरी करके मैंने पूरा घर चलाया। पर आज मेरी धर्मपत्नी को मुझ पर तिल भर विश्वास नहीं हो रहा है। दिल टूट-फूट गया।

मैंने कहा-ऐसा क्यों?

वह बोले-श्रीमती जी कह रहीं हैं जब तुम मुझे पहली बार देखने आए थे, तब कहा गया था कि तुम बीए पास हो। फिर तुम्हारे नौकरी वाले सारे कागज इंटर बेस पर क्यों हैं। कहाँ है तुम्हारी बीए पास की डिग्री। लाओ दिखाओ।....बहुत संकट में हूँ भाई, क्या बताऊं,घरवाली के हाथ पुराना बक्सा क्या लगा ,मेरी तो वॉट ही लग गई। नौकरी के कुछ पुराने कागज पा गयी। अब मैं कैसे समझाऊं कि नौकरी करना था, उस समय, कक्षा बारह ही पास था और किसी तरह वह सरकारी नौकरी मैंने हथिया ली। मेरे बीए पास वाली वह खबर तो मां-बाप और मेरे रिश्तेदारों ने मेरी शादी के लिए मुनादी करवाई थी। उस वक्त मैं तो नादान लड़का था। उस समय बीए पास वालों की शादी जल्दी हो जाया करती थी।

बड़ा दान-दहेज भी मिलता होगा, इसलिए....। मैंने चुटकी ली।

यह तो स्वाभाविक ही था। वह दीर्घ सांस लेकर बड़ी शांति से बोले।

यानी बीए पास नौकरी वाले लड़कों की खूब बल्ले-बल्ले होगी उस समय आंय।÷ अब मैंने कटाक्ष किया।

÷उस वक्त की बल्ले-बल्ले आज उड़ान झल्ले सा झेल रहा हूं भाई। मां-बाप के आगे तब हम लौडो-लपाड़ों की क्या बिसात थी। लिहाजा अपना घर बस गया। बच्चे हुए, बच्चों के घर बस गए। अब बुढ़ापे में पत्नी मुझे निर्वासित करने पर तुली है। तुमने झूठ क्यों बोला, इस बात को बार-बार सुईं जैसे वह मुझे कोंच रही है, इस झूठ को लेकर रूस की तरह, मुझे यूक्रेन समझ, अपने शब्द वाणों की मिसाइलों से, मेरी ऐसी-तैसी करने पर तुली है, मैं आखिर कहाँ से बीए पास की डिग्री लाऊं। जब दूध ही नहीं तो छाछ कहाँ से घोंट डालूं लाले?

मैंने उनकी दुखती रग को सहलाया, जब जिंदगी की गाड़ी यहाँ तक खींच लाएं हैं, तो अब काहे रोज-रोज ट्रंप की तरह दुखी आत्मा से टैरिफ-टैरिफ चिल्ला-चिल्ला कर मचल रहे हो। हलकान हो?

तुम्हें नहीं पता, मेरे गले में पत्नी बिहार के एस. आई. आर. की तरह अटकी है। कह रही है, चाहे जहाँ जाओ पर बीए पास की डिग्री लेकर आओ। अब मैं कैसे उसे समझाऊँ कि जब मैं बीए पास ही नहीं हूं, तो फिर डिग्री कहाँ से खोद कर आऊं या खोज-बीन कर लाऊं।

मैंने कहा-तुम्हें तो झूठ नहीं बोलना चाहिए था?

वह दुखी दिल से बोले-भाई मैंने तो झूठ नहीं बोला था, हाँ मैं युधिष्ठिर की तरह मौन रहा, जब मेरे बीए पास होने की ढोल जोर-शोर से पीटी जा रही थी।

बस यहीं गलती कर दी तुमने। जहां झूठे अपना सिक्का उछाल रहे हों, जमा रहे हों, वहां मौन रहना भी एक तरीके से अपराध ही है। यह अपराध आप ने किया है ,शर्मा जी, अब शर्म करो।

अजीब हो तुम भी यार पत्नी के कोप से बचने का कोई रास्ता नहीं सुझा रहे हो, ऊपर से मेरी टांग खिचाई किए जा रहे हो। यहाँ ओखली में सिर है और तुम राम-रहीम की तरह मेरी छाती पर अपने ज्ञान का ढोल बजाये जा रहे हो।

रास्ता सिंपल है, कह दो खो गई।

अगर मैं कह देता हूं, खो गई तो कहेगी कि यूनिवर्सिटी से डुप्लीकेट निकलवाओ तब तब?

ऐसी यूनिवर्सिटी बताओ, जो कभी शुरू ही न हुई हो, कह दो कि रंगा-बिल्ला यूनिवर्सिटी से बीए किया था, जो आर्थिक कारणों से, बाद में बंद हो गयी। टूट-फूट गयी। फिर डुप्लीकेट भी कहां से आऊं?

फिर भी न मानी तो?

घुटनों के बल पत्नी के सामने बैठ जाना। पत्नी चालीसा गाते हुए, रोते हुए, गिड़गिड़ाते हुए, अपनी सलामती की दरख्वास्त देवी जी के सामने पेश करना। जब बहते हुए आंसू बड़े-बड़े नेताओं के सारे पापों को धो देते हैं, तब तुम्हारे भी सारे पाप धुल जाएंगे। काहे टेंशन लेते हो यार!, तुम्हारे झर-झर बहे आंसूओं की ममता करुणा, एक कोमल स्त्री के हृदय को बिलकुल मोम बना कर पिघला देंगे। वैसे भी आजकल रोने-गाने वालों का ही युग है। दौर है। फिर भी पाप पीछा न छोड़े तो गुफा में बैठकर समाधि लगाना या केसरिया कपड़े पहन कर गंगा में डुबकी लगाना ,सारे पाप-शाप धुल जाएंगे।अब शर्मा जी पुलकित हुए, मेरे ज्ञान दर्शन से उनके शरीर में फुरफुरी दौड़ गयी।उनके बंद दिव्य ज्ञान के पूरे कपाट खुल गए।अब युवा अनिरुद्धाचार्य की तरह अपने कंधे उचकाते हुए,फुल मस्ती में चल पड़े। ऐसा लग रहा था, आत्मज्ञान पाकर अपनी मस्ती में एक मस्त मलंग फकीर सरपट-सरपट भागा जा रहा हो।

आरएसएस के सौ साल

दत्तात्रेय होसबाले

लेखक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह हैं।

समाज सहयोग से संघ शताब्दी यात्रा सुगम बनी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य को अभी सौ वर्ष पूर्ण हो रहे है। इस सौ वर्ष की यात्रा में कई लोग सहयोगी और सहभागी रहे हैं। यह यात्रा परिश्रम पूर्ण और कुछ संकटों से अवश्य घिरी रही, परंतु सामान्य जनों का समर्थन उसका सुखद पक्ष रहा। आज जब शताब्दी वर्ष में सोचते हैं तो ऐसे कई प्रसंग और लोगों का स्मरण आता है, जिन्होंने इस यात्रा की सफलता के लिए स्वयं सब कुछ समर्पित कर दिया।

प्रारंभिक काल के वे युवा कार्यकर्ता एक योद्धा की तरह देश प्रेम से ओत-प्रोत होकर संघ कार्य हेतु देशभर में निकल पड़े। अप्पाजी जोशी जैसे गृहस्थ कार्यकर्ता हों या प्रचारक स्वरूप में दादाराव परमार्थ, बालासाहब व भाऊराव देवरस बंधु, यादवराव जोशी, एकनाथ रानडे आदि लोग डॉक्टर हेडगेवार जी के सान्निध्य में आकर संघ कार्य को राष्ट्र सेवा का जीवनव्रत मानकर जीवन पर्यन्त चलते रहे।

संघ का कार्य लगातार समाज के समर्थन से ही आगे बढ़ता गया। संघ कार्य सामान्य जन की भावनाओं के अनुरूप होने के कारण शनैः शनैः इस कार्य की स्वीकार्यता समाज में बढ़ती चली गई। स्वामी विवेकानंद से एक बार उनके विदेश प्रवास में यह पूछा गया कि आपके देश में तो अधिकतम लोग अनपढ़ हैं, अंग्रेज़ी तो जानते ही नहीं हैं, तो आपकी बड़ी-बड़ी बातें भारत के लोगों तक कैसे पहुँचेगी? उन्होंने कहा कि जैसे चीटियों को शक्कर का पता लगाने के लिए अंग्रेज़ी सीखने की ज़रूरत नहीं है, वैसे ही मेरे भारत के लोग अपने आध्यात्मिक ज्ञान के चलते किसी भी कोने में चल रहे सात्विक कार्य को तुरंत समझ जाते हैं व वहीं वो चुपचाप पहुँच जाते हैं। इसलिए वे मेरी बात समझ जायेंगे। यह बात सत्य सिद्ध हुई। वैसे ही संघ के इस सात्विक कार्य को धीरे क्यों न हो, सामान्य जन से स्वीकार्यता व समर्थन लगातार मिल रहा है।

संघ कार्य के प्रारंभ से ही संपर्कित व नये-नये सामान्य परिवारों द्वारा संघ कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद व आश्रय प्राप्त होता रहा। स्वयंसेवकों के परिवार ही संघ कार्य संचालन के केंद्र रहे। सभी माता-भगिनियों के सहयोग से ही संघ कार्य को पूर्णता प्राप्त हुई। दत्तोपंत ठेंगड़ी या यशवंतराव केलकर, बालासाहेब देशपांडे तथा एकनाथ रानडे, दीनदयाल उपाध्याय या दादासाहेब आपटे जैसे लोगों ने संघ प्रेरणा से समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में संगठनों को खड़ा करने में अहम भूमिका निभाई। ये सभी संगठन वर्तमान समय में व्यापक विस्तार के साथ-साथ उन क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव लाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। समाज की बहनों के मध्य इसी राष्ट्र कार्य हेतु राष्ट्र सेविका समिति के माध्यम से मौसी जी केलकर से लेकर प्रमिलाताई मेढ़े जैसी मातृसमान हस्तियों की भूमिका इस यात्रा में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

संघ द्वारा समय-समय पर राष्ट्रीय हित के कई विषयों को उठाया गया। उन सभी को समाज के विभिन्न लोगों का समर्थन प्राप्त हुआ, जिनमें कई बार सार्वजनिक रूप से विरोधी दिखने वाले लोग भी शामिल रहे। संघ का यह भी प्रयास रहा कि व्यापक हिंदू हित के मुद्दों पर सभी का सहयोग प्राप्त किया जाए। राष्ट्र की एकात्मता, सुरक्षा, सामाजिक सौहार्द तथा लोकतंत्र एवं धर्म-संस्कृति की रक्षा के कार्य में असंख्य स्वयंसेवकों ने अवर्णनीय कष्ट का सामना किया और सैकड़ों का बलिदान भी हुआ। इन सबमें समाज के संबल का हाथ हमेशा रहा है।

1981 में तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम में भ्रमित करते हुए कुछ हिंदुओं का मतांतरण करवाया गया। इस महत्वपूर्ण विषय पर हिंदू जागरण के क्रम में आयोजित लगभग पाँच लाख की उपस्थिति वाले सम्मेलन की अध्यक्षता करने हेतु तत्कालीन कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डॉ. कर्णसिंह उपस्थित रहे। 1964 में विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना में प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी चिन्मयानंद, मास्टर तारा सिंह व जैन मुनी सुशील कुमार जी, बौद्ध भिक्षु कुशोक बकुला व नामधारी सिख सद्गुरु जगजीत सिंह इनकी प्रमुख सहभागिता रही। हिन्दू शास्त्रों में अस्पृश्यता का कोई स्थान नहीं है यह पुनर्स्थापित करने के उद्देश्य से श्री गुरूजी गोलवलकर की पहल पर उडुपी में आयोजित विश्व हिंदू सम्मेलन में पूज्य धर्माचार्यों सहित सभी संतों-महंतों का आशीर्वाद व उपस्थिति रही। जैसे प्रयाग सम्मेलन में न हिंदुः पतितो भवेत् (कोई हिन्दू पतित नहीं हो सकता) का प्रस्ताव स्वीकार हुआ था वैसे ही इस सम्मेलन का उद्घोष था - हिंदवः सोदराः सर्वे अर्थात सभी हिन्दू भारत माता के पुत्र हैं। इन सभी में तथा गौहत्या बंदी का विषय हो या राम जन्मभूमि अभियान, संतों का आशीर्वाद संघ स्वयंसेवकों को हमेशा प्राप्त होता रहा है।

स्वाधीनता के तुरंत पश्चात राजनीतिक कारणों से संघ कार्य पर तत्कालीन सरकार द्वारा जब प्रतिबंध लगाया गया, तब समाज के सामान्य जनों के साथ अत्यंत प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने विपरीत परिस्थितियों में भी संघ के पक्ष में खड़े होकर इस कार्य को संबल प्रदान किया। यही बात आपातकाल के संकट समय में भी अनुभव में आई। यही कारण है कि इतनी बाधाओं के पश्चात भी संघ कार्य अक्षुण्ण रूप से निरंतर आगे बढ़ रहा है। इन सभी परिस्थितियों में संघ कार्य एवं स्वयंसेवकों को सँभालने का दायित्व हमारी माता-भगिनीयों ने बड़ी कुशलता से निभाया। यह सभी बातें संघ कार्य हेतु सर्वदा प्रेरणास्रोत बन गयी हैं। भविष्य में राष्ट्र की सेवा में समाज के सभी लोगों के सहयोग एवं सहभागिता के लिए संघ स्वयंसेवक शताब्दी वर्ष में घर-घर संपर्क के द्वारा विशेष प्रयास करेंगे। देशभर में बड़े शहरों से लेकर सुदूर गाँवों के सभी जगहों तक तथा समाज के सभी वर्गों तक पहुँचने का प्रमुख लक्ष्य रहेगा। समूचे सज्जन शक्ति के समन्वित प्रयासों द्वारा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास की आगामी यात्रा सुगम एवं सफल होगी।

राष्ट्र जागरण की साधना के सौ वर्ष की यात्रा

संघ शताब्दी वर्ष पर विशेष

हितानंद शर्मा

लेखक मध्यप्रदेश भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्षों की यात्रा वास्तव में राष्ट्र जागरण की ध्येय यात्रा है। वर्ष 1925 में विजयादशमी के दिन नागपुर के मोहिते बाड़ा में रोपा गया राष्ट्र साधना का छोटा सा बीज आज एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है। राष्ट्र प्रथम के एकनिष्ठ भाव के साथ किए जा रहे सतत और अनथक प्रयासों से संघ की पहचान आज विश्व के सबसे बड़े संगठन के रूप में बनी है। राष्ट्र, संस्कृति, धर्म एवं समाज के हित में सर्वस्व अर्पण कर देने वाले स्वयंसेवक भारत के पुनरुत्थान की साधना में निरंतर लगे हुए हैं। संघ शताब्दी वर्ष चरैवेति-चरैवेति के मंत्र के साथ बढ़ रहे वैचारिक अधिष्ठान का एक सोपान है।

संघ के आद्य सरसंघचालक परम पूजनीय डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य भारत को स्वाधीन बनाने के साथ ही स्व-बोध की चेतना से युक्त एक संगठित समाज का निर्माण करना था। माँ भारती को परम वैभव पर आसीन करने की 100 वर्षों की यह यात्रा सरल नहीं रही। अनेक कठिनाइयों, विरोधों और बाधाओं को ही मार्ग बनाते हुए संघ ने भारत माता की सेवा में व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का कार्य सतत जारी रखा है।

स्वतंत्रता आंदोलन और स्वतंत्रता के पश्चात संघ ने समाज को देश की सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का कार्य किया। स्वतंत्रता के पश्चात् भी जब देश में औपनिवेशिक मानसिकता से प्रेरित और गुलाम पीढ़ी तैयार करने वाली मैकाले शिक्षा पद्धति जारी रखी गई तब संघ प्रेरणा से 1952 में 'विद्या भारती' की स्थापना की गई, जो शिक्षा एवं संस्कार देने वाला आज विश्व का सबसे बड़ा अशासकीय शैक्षणिक संगठन है। युवाओं को राष्ट्रीय विचारों से जोड़ने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, श्रमिकों के हित में कार्य करने भारतीय मजदूर संघ, किसानों के लिए भारतीय किसान संघ, सेवा कार्यों के लिए सेवा भारती और संस्कार भारती आदि अनेक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से स्वयंसेवकों द्वारा स्थापित किए गए जो आज भी समाज में सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। 1936 में स्थापित राष्ट्र सेविका समिति के साथ मिलकर संगठन ने महिलाओं की भूमिका को भी समान महत्व दिया है। आज विचार परिवार के प्रत्येक संगठन में महिला नेतृत्व की सशक्त उपस्थिति इसी दृष्टिकोण का परिणाम है।

स्वतंत्रता के पश्चात् जब भारतीय राजनीति अपने मूल और दिशा से भटकने लगी, देश की संप्रभुता के लिए ही संकट उत्पन्न हो गया, तब पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की। भारतीय जनसंघ आगे चलकर भारतीय जनता पार्टी के रूप में विकसित हुआ। भारतीय जनता पार्टी वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन है। इसे एक ऐसे संगठन के रूप में भी समाज का सम्मान प्राप्त होता है, जिसने अपने गठन के समय से चले आ रहे लगभग सभी प्रमुख संकल्पों को पूर्ण करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। जम्मू-कश्मीर से धारा 370 की समाप्ति, अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण और भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाना इसी विचारधारा के ऐतिहासिक कार्य हैं।

संघ की सौ वर्ष की यात्रा कठिन चुनौतियों से भरी रही है। संघ अपने आरंभिक काल से ही अपनों के ही विरोध, आक्रमण, उपहास और अपमान सहकर भी इस अनवत यात्रा में आगे बढ़ा है। महात्मा गांधी की हत्या के मिथ्या आरोप, दो बार लगाए गए प्रतिबंध, आपातकाल की असहनीय यातनाएं और तमाम विरोधों के पश्चात भी संघ अपने संकल्पों पर दृढ़ रहा। इस साधना की यज्ञ वेदी में असंख्य स्वयंसेवक समिधा बन कर होम भी हुए हैं। स्वयंसेवकों की तपस्या और प्रचारकों के समर्पण ने संगठन को उस स्थिति तक पहुंचाया, जहां आज विश्वभर में लोग संघ को निकट से जानना और उससे जुड़ना चाहते हैं।

भारत के गौरवशाली स्वर्णिम इतिहास, संस्कृति, ज्ञान-परंपरा के संघरूपी वटवृक्ष की जड़ें गहरे तक समायी हुई हैं। संघ की शाखाएं संगठन का सबसे प्रबल पक्ष हैं। समाज में यह वाक्य प्रचलन में भी आ चुका है कि यदि संघ को समझना है तो शाखा में जाकर भलीभांति समझा जा सकता है। संघ की शाखाएं व्यक्ति निर्माण की नर्सरी भी कही जाती हैं। शाखा के माध्यम से स्वयंसेवकों का शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक विकास होता है। खेल, गीत, अनुशासन और बौद्धिक कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें नेतृत्व, अनुशासन, बंधुत्व और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा मिलती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं के माध्यमम से समाज का ऐसा संगठन तैयार हुआ है कि देश में कहीं भी प्राकृतिक आपदाओं, मानवीय संकटों और विदेशी आक्रमणों, हर परिस्थिति में संघ के स्वयंसेवक सबसे पहले सेवा कार्य के लिए उपस्थित रहते हैं। गुजरात के भुज में आए भूकंप से लेकर हाल की भीषण बाढ़ की घटनाओं और कोरोना महामारी के दौरान भोजन, परिवहन, दवाइयों से लेकर पीड़ितों के अंतिम संस्कार तक की सेवाओं में स्वयंसेवकों ने निःस्वार्थ भाव से अपना योगदान दिया। इससे पूर्व स्वतंत्रता संग्राम, गोवा मुक्ति आंदोलन, कश्मीर के भारत में विलय, चीन के आक्रमण जैसे ऐतिहासिक घटनाक्रमों में भी संघ की भूमिका उल्लेखनीय रही।

शताब्दी वर्ष संघ की संकल्प यात्रा को और अधिक गति देने का अवसर है। संगठन 'पंच परिवर्तन' के माध्यम से स्वदेशी, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्यों, सामाजिक समरसता और परिवार प्रबोधन जैसे विषयों को जन-जन तक पहुंचाने में सक्रिय है। शताब्दी वर्ष के इस महत्वपूर्ण एवं स्मरणीय अवसर पर संघ किसी भव्य आयोजन की बजाय प्रत्येक भारतीय नागरिक तक पहुंचकर उसे अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का बोध कराने का कार्य कर रहा है।

संघ का कार्यकर्ता होना जीवन को राष्ट्र सेवा की दिशा में लगा देने की प्रक्रिया है। शाखा का संस्कार व्यक्ति में मातृभूमि के प्रति ऐसा असीम प्रेम जगा देता है कि वह निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित हो जाता है। स्वयंसेवक के लिए ÷भारत माता की जय÷ ही उसका परम ध्येय बन जाता है।

2026 में जब संघ का शताब्दी वर्ष पूर्ण होगा, तब लक्ष्य यही रहेगा कि प्रत्येक भारतीय को राष्ट्र यज्ञ में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है, ताकि भारत फिर से विश्वगुरु के रूप में विश्व का मार्गदर्शन कर सके। इस लक्ष्य के साधक होने के नाते हम सब भी इस राष्ट्र यज्ञ में अपनी-अपनी कर्तव्यों रूपी समिधा आहूत करें।

'पूर्ण विजय संकल्प हमारा
अनथक अविरत साधना।
निषिदिन प्रतिपल चलती आयी
राष्ट्रधर्म आराधना।'

आज जब भारत नए आत्मविश्वास और स्वाभिमान के साथ विश्व मंच पर स्वाभिमान और स्व-बोध के गौरव के साथ खड़ा है, तब संघ की यह सौ वर्षीय यात्रा केवल एक संगठन की कथा नहीं, बल्कि उस विचार की गौरव गाथा है जिसने राष्ट्र को आत्मबोध, संगठन और संस्कृति की शक्ति से जोड़ा। इस अवसर पर प्रत्येक स्वयंसेवक और नागरिक को यह संकल्प लेना चाहिए कि वह भारत माता को परम वैभव पर आसीन करने में अपना योगदान देंगे। सभी स्वयंसेवकों और देशवासियों को संघ शताब्दी वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

शाकाहार- खुशी, करुणा एवं उत्तम स्वास्थ्य का स्रोत

विश्व शाकाहार दिवस

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शैक्षिक संवाद मंच उ.प्र. के संस्थापक हैं।

समूचे विश्व में मानव के दैनंदिन भोजन में मांसाहार या शाकाहार व्यंजन होते हैं। अगर मनुष्य के दैहिक पोषण एवं ऊर्जा आवश्यकता पर दृष्टिपात करें तो शाकाहार से समुचित एवं पर्याप्त पोषण एवं ऊर्जा प्राप्त हो जाती है। मनुष्य के दांत-आंत एवं पाचन तंत्र की कार्य प्रणाली भी शाकाहार के अनुरूप है, हालांकि कुछ लोगों में मतांतर सम्भव है। किंतु सत्य यही है कि मानव का एकमात्र भोजन वनस्पति आधारित सामग्री ही है। हमारे लोकजीवन में एक प्राचीन कहावत है, जैसा खाये अन्न, वैसा होये मन्न, अर्थात् हम जैसा भोजन ग्रहण करेंगे वैसा ही हमारा मन बनता है। मन शरीर की अभौतिक इकाई है जो व्यक्ति के विचार, चिंतन, संस्कृति, स्मृति तथा कार्य-व्यवहार एवं आचरण को प्रभावित करती है, और तदनुरूप तर्क, वाद-विवाद एवं निर्णय हेतु बुद्धि को प्रेरित करती है। गर्भस्थ जीव में मन एवं बुद्धि होती है, जिसको पोषण मां द्वारा किये गये भोजन से मिलता है और तदनुरूप उसकी प्रवृत्ति बनती है। शाकाहार सात्विक भोजन ग्रहण करने से शिशु की मन-बुद्धि निर्मल एवं शुद्ध सात्विक बनती है। वीर बालक अभिमन्यु और भक्त प्रह्लाद के उदाहरण हमारे जीवंत मार्गदर्शक हैं, जिन्होंने गर्भकाल में ही शर-संधान शक्ति एवं भगवद्भक्ति का पाठ श्रवण कर आत्मसात कर लिया था। सनातन संस्कृति में शुद्ध सात्विक शाकाहार भोजन को आध्यात्मिक जागरण एवं साधना सिद्धि के लिए आवश्यक साधन कहा गया है। मां अन्नपूर्णा देवी की स्तुति करते हुए अन्न की भिक्षा की प्रार्थना की गई है- अन्नपूर्णे सदापूर्णे, शंकर प्राण वल्लभे, ज्ञान वैराग्य सिद्धि अर्थम्, भिक्षाम्देहि च पार्वती। श्रीमद्भगवद्गीता में यज्ञ हवन-समिधा हेतु शुद्ध अन्न का विधान वर्णित है। आयुर्वेदिक ग्रंथ शाकाहार की अनुशंसा एवं अनुसमर्थन करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास विरचित 'रामचरित मानस' में तो पदे-पदे कंद-मूल, फल, शाक-पात से ही ऋषियों द्वारा प्रभु श्रीराम, जानकी एवं लक्ष्मण का स्वागत वंदन करने के दृश्य उल्लेखनीय हैं। स्पष्ट है, शाकाहार ही मनुष्य मात्र के लिए उचित, उपयोगी एवं उत्तम है। शाकाहार प्रत्येक व्यक्ति में करुणा, धैर्य, संयम, दृढ़ता, मित्रता, वीरता, सत्साहस, उत्पन्न करता है, आंतरिक चेतना का जागरण कर आनंद प्रकट करता है। शाकाहार हृदय में अहिंसा, शांति, प्रेम, जीवों के प्रति दयाभाव, विनम्रता, प्रीति, सख्य एवं संस्कार-सहकार का सर्जन करता है। जीवन में मधुर रस का सिंचन कर मन प्रफुल्लित एवं प्रमुदित कर प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करता है। विश्व में दिनानुदिन शाकाहारी व्यक्तियों की वृद्धि परिचायक है कि विश्व अब शाकाहार की महत्ता को स्वीकार कर रहा है। इसीलिए प्रत्येक वर्ष अक्टूबर महीने को शाकाहार माह के रूप में मनाते हुए 1 अक्टूबर को विश्व शाकाहार दिवस का आयोजन किया जाता है। शाकाहार दिवस के आयोजन के माध्यम से शाकाहार से प्रभावित एवं प्रेरित होकर प्रति वर्ष हजारों व्यक्ति मांसाहार त्याग कर वनस्पति आधारित भोजन पद्धति स्वीकार कर रहे हैं।

उत्तरी अमेरिकी शाकाहारी समुदाय की स्थापना 1 अक्टूबर, 1977 को हुई थी जो स्वस्थ जीवन शैली, नैतिकता, पर्यावरण संरक्षण, मानवीय लाभों तथा खुशियों की प्राप्ति एवं दयाभाव के प्रसार के लिए शाकाहार दिवस का आयोजन करता है, जिसे अंतरराष्ट्रीय शाकाहार संघ ने 1978 में सहयोग एवं समर्थन देकर प्रभावी बना दिया। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जोसेफ पुअर अपने अध्ययन में कहते हैं, 'शाकाहारी बनने से न केवल ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम होता है, बल्कि वैश्विक अम्लीकरण, सुपोषण, भूमि उपयोग और जल उपभोग की समस्या भी हल होती है।' इतना ही नहीं, शाकाहार ओजोन परत की रक्षा कर पर्यावरण स्वस्थ रखता है।

भारत विश्व का प्रमुख शाकाहारी देश है। राजस्थान में 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या शाकाहारी हैं। हरिद्वार (उत्तराखंड) तथा पालीताना (गुजरात) शाकाहारी शहर के रूप में जाने जाते हैं। जैन धर्मावलंबी पूर्ण शाकाहारी होते हैं जो उनकी आध्यात्मिक जाग्रति के लिए परमावश्यक है। संयुक्त राज्य अमेरिका में 6 प्रतिशत से अधिक लोग शाकाहार अपना चुके हैं। इजरायल, ब्रिटेन, ब्राज़ील में भी शाकाहार बढ़ रहा है। अत्यन्त शाकाहारियों का वर्ग 'वीगन' तो पशु उत्पाद यथा दूध, दही, अंडा, चमड़ा, रेशम, ऊन, शहद तथा पशुओं के अंश से निर्मित सजावटी वस्तुएं एवं सौंदर्य उत्पादों का भी प्रयोग नहीं करते। वे केवल वनस्पति आधारित भोजन फल, फूल, कंद, सब्जी, अनाज, दालें, बीज आदि ग्रहण करते हैं। शाकाहार मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत उपयोगी एवं रोगमुक्ति में सहायक है। शाकाहार मोटापा नहीं बढ़ाता है तथा हृदय रोग, मधुमेह, कैंसर, रक्तचाप, स्मृति भ्रंश के खतरों को कम करता है। शाकाहार मृदा स्वास्थ्य एवं संरक्षण को बल देता है, मीठे जल एवं वनों का रक्षण करता है। वास्तव में शाकाहार जीवन शैली पशुओं के प्रति मानव को क्रूरता एवं शोषण से मुक्त करती है। पशुओं के प्रति प्रेम एवं आत्मीयता भाव का प्रसार करती है। पशु-पक्षी भी मानव एवं पेड़-पौधों के साथ प्रकृति के विशाल परिवार के अहम सदस्य हैं, यह भाव शाकाहार ही पुष्ट करता है। विश्व शाकाहार दिवस के माध्यम से मानव के दैनंदिन भोजन में शाकाहार को बढ़ावा देने का भाव है, साथ ही पशु-पक्षियों को बचाने की इच्छा भी है ताकि प्रकृति का संतुलन बना रहे। निश्चित रूप से प्रकृति के संरक्षण, संवर्धन एवं सौंदर्य के लिए मनुष्यों के साथ पशु-पक्षियों का निर्भय जीवन आवश्यक है।

अनवरत साधना के साथ सौ वर्ष

स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) के बाद भी गोवा, दादर-नगर हवेली और कुछ प्रांत पुर्तगालियों के अधीन थे। इन्हें आज़ाद कराने हेतु राजाभाऊ महाकाल जैसे अनेक स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों की आहुति दी। वर्तमान दौर में जब पूरा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा था, तब भी संघ के स्वयंसेवक सेवा कार्यों में सबसे पहले आगे आए। जब-जब समाज और राष्ट्र संकटग्रस्त हुआ, तब-तब लोगों ने आशा की किरण के रूप में आरएसएस की ओर देखा।

शताब्दी वर्ष विशेष

अमित राव पवार

युवा लेखक

महाराष्ट्र के नागपुर नगर के एक छोटे से स्थान मोहिते के बाड़े से आरंभ हुई यात्रा आज देश-विदेश में एक विशाल, सशक्त वृक्ष के रूप में स्थापित हो चुकी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) आज भारत ही नहीं, विश्व के लिए भी परिचित नाम है। यह संगठन अपने 99 वर्षों की यात्रा पूर्ण कर अब 100वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। संघ की अनगिनत शाखाएँ समाज व राष्ट्र कल्याण के विविध कार्यों में संलग्न हैं। समय आने पर आरएसएस के स्वयंसेवक भारतभूमि की रक्षा के लिए बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटते।

स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) के बाद भी गोवा, दादर-नगर हवेली और कुछ प्रांत पुर्तगालियों के अधीन थे। इन्हें आज़ाद कराने हेतु राजाभाऊ महाकाल जैसे अनेक स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों की आहुति दी। वर्तमान दौर में जब पूरा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा था, तब भी संघ के स्वयंसेवक सेवा कार्यों में सबसे पहले आगे आए। जब-जब समाज और राष्ट्र संकटग्रस्त हुआ, तब-तब लोगों ने आशा की किरण के रूप में आरएसएस की ओर देखा।

विडंबना यह रही कि कांग्रेस सरकार ने तीन बार संघ पर प्रतिबंध लगाया, किंतु हर बार प्रतिबंध हटने के बाद संघ दोगुनी ऊर्जा व उत्साह के साथ पुनः समाज के समक्ष सेवाकार्य हेतु प्रस्तुत हुआ और समाज ने उसे सहजता से स्वीकार भी किया। आज भी विश्व पटल पर संघ जैसा कोई दूसरा संगठन दिखाई नहीं देता, जिसके प्रचारक राष्ट्र के लिए अपना घर-परिवार, माता-पिता, रिश्ते-नाते सब त्यागकर संपूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित करते हों।

आज विश्व में जब भी कोई बड़ी घटना घटित होती है, तब सम्पूर्ण विश्व की दृष्टि भारत की प्रतिक्रिया पर टिकती है। भारत आज विश्व के केंद्र में है और भारत के केंद्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है।

स्थापना और उद्देश्य

संघ अपनी शताब्दी यात्रा पूर्ण कर रहा है। यह यात्रा कैसी रही, कितने उतार-चढ़ाव आए, संघ ने अपने भीतर कौन-से परिवर्तन किए और समाज में कौन-से परिवर्तन ला पाया ङ्क यही सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। संघ की स्थापना से पूर्व स्वतंत्रता संग्राम में तीन प्रमुख विचारधाराएँ सक्रिय थीं

किसी भी परिस्थिति में स्वतंत्रता प्राप्त करना- बाकी समस्याएँ स्वतंत्रता के बाद सुलझ जाएँगी।

स्वतंत्रता आवश्यक है, परंतु उससे पूर्व समाज सुधार अधिक आवश्यक है।

स्वतंत्रता और समाज सुधार दोनों ज़रूरी हैं, किंतु सबसे बड़ा कार्य हिंदू समाज की सुरक्षा और संगठन है।

डॉ. हेडगेवार ने एक नवीन दृष्टिकोण दिया - स्वतंत्रता, समाज सुधार और हिंदू सुरक्षा महत्वपूर्ण हैं, किंतु सबसे महत्वपूर्ण कार्य है हिंदू समाज में राष्ट्रभाव का जागरण। यदि राष्ट्रभाव सशक्त रहेगा, तो अन्य समस्याएँ उत्पन्न ही नहीं होंगी। इसी विचार को आधार बनाकर 27 सितंबर 1925 (विजयादशमी) को संघ की स्थापना की गई।

संघ की यात्रा पाँच चरणों में आगे बढ़ी

उपहास का चरण - शुरुआत में लोगों ने संघ को बच्चों के खेल-खिलौनों जैसा समझकर उपहास किया।

उपेक्षा का चरण - समाज और सत्ता ने उपेक्षा की, इसे एक अस्थायी संगठन मानकर गंभीरता से नहीं लिया।

विरोध का चरण - जब संघ की शक्ति बढ़ी तो सत्ता ने दमन और प्रतिबंध के प्रयास किए। संघ ने कठोर अग्निपरीक्षा में विजय पाई।

सहयोग का चरण - साधना, राष्ट्रभक्ति और सेवा देखकर समाज ने सहयोग देना आरंभ किया।

स्वीकार्यता का चरण (वर्तमान) - आज समाज विश्वास के साथ संघ के साथ खड़ा है। अयोध्या श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा जैसे महत्त्वपूर्ण कार्यों में समाज ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

संघ की 100 वर्षों की साधना से समाज में कई स्थायी परिवर्तन आए

हिंदू स्वाभिमान का जागरण - पहले लोग कहते थे 'गधा कह लो पर हिंदू मत कहो', आज गर्व से कहते हैं - 'हम हिंदू हैं।'

राष्ट्र-प्रथम की भावना - पहले स्वार्थ प्रमुख था, अब लोग 'नेशन फर्स्ट' की अवधारणा को जीवन में उतार रहे हैं।

इतिहास और संस्कृति पर गर्व - हमारे महापुरुष, परंपराएँ और संस्कृति महान हैं - यह गौरव भाव समाज में स्थायी हुआ।

समरसता का प्रयास - समाज के हर वर्ग में एकता व सहयोग की भावना बढ़ी।

राष्ट्रव्यापी जनांदोलन- राम जन्मभूमि, अमरनाथ आंदोलन आदि में समाज ने एकजुट होकर गौरव और स्वाभिमान को पुनर्जीवित किया।

शताब्दी वर्ष में पंच-परिवर्तन

संघ अब पाँच महत्त्वपूर्ण कार्यों की दिशा में अग्रसर है-

पर्यावरण संरक्षण - प्रकृति पूजन की परंपरा को पुनर्जीवित कर समाज को पर्यावरण से जोड़ना।

समरसता -मतभेद समाप्त कर समाज को एक दिशा में संगठित करना।

कुटुंब प्रबोधन -परिवार व्यवस्था को सुदृढ़, संस्कारयुक्त और सामर्थ्यवान बनाना।

स्वदेशी जागरण -वेशभूषा, भाषा, परंपरा और उत्पादों में स्वदेशी को प्राथमिकता देना।

नागरिक कर्तव्य -अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का पालन करना।

वयोश्री योजना अंतर्गत वरिष्ठ नागरिकों के लिए परीक्षण शिविर आज

बैतूल। वयोश्री योजना के अंतर्गत वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष से अधिक आयु) के लिए परीक्षण शिविर का आयोजन आज 1 अक्टूबर को सुबह 10 बजे से जिला दिव्यांग एवं पुनर्वास केंद्र, जिला चिकित्सालय परिसर बैतूल में आयोजित किया जाएगा। उपसंचालक सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण बैतूल ने जानकारी दी है कि इस अवसर पर एलिम्को संस्था जबलपुर की विशेषज्ञ टीम द्वारा वरिष्ठ नागरिकों का कृत्रिम अंग, सहायक उपकरण एवं अन्य आवश्यक साधनों के लिए चिन्हांकन किया जाएगा। शिविर में आने वाले वरिष्ठ नागरिकों को अपने साथ फोटो, आधार कार्ड, बीपीएल कार्ड अथवा मनरेगा कार्ड, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना या राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम अथवा राज्य/केंद्र सरकार की किसी अन्य पेंशन योजना से संबंधित पेंशन प्रमाण पत्र साथ लाना होगा। बीपीएल श्रेणी के अलावा वे वरिष्ठ नागरिक जिनकी सभी स्त्रोतों से मासिक आय 15 हजार रुपये से कम है, उन्हें आय प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य रहेगा। उपसंचालक सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण बैतूल ने जिले के सभी वरिष्ठ नागरिकों से अपील की है कि वे इस शिविर का लाभ अवश्य उठाएं।

कृषि सखी का पांच दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

बैतूल। कृषि विज्ञान केन्द्र बैतूल में प्राकृतिक खेती पर कृषि सखी का 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम विगत दिनों संपन्न हुआ। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि डॉ. व्हीके वर्मा एवं मुख्य अतिथि सुधाकर पवार उपस्थित थे। प्रशिक्षण के आरंभ में केन्द्र प्रमुख डॉ.एस.के. तिवारी ने सभी सदस्यों का स्वागत किया एवं कृषि सखी को प्राकृतिक खेती का महत्व बताया। इस प्रशिक्षण के दौरान केंद्र के वैज्ञानिक, डॉ. सजीव वर्मा ने प्राकृतिक खेती के द्वारा मृदा स्वास्थ्य सुधार के बारे में बताया। केन्द्र के पौध संरक्षण वैज्ञानिक श्री आर.डी. बारपेटे ने प्राकृतिक प्रबंधन उपाय के द्वारा कीट एवं रोग से बचाव के बारे में बताया। डॉ. मेघा तिवारी वैज्ञानिक और डॉ. एम.पी. इंगले द्वारा प्राकृतिक घटक जीवामृत, बीजामृत, नीमास्त्र और दशपर्णी बनाने का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। डॉ. संजय जैन ने देशी बीज तथा उन्नत किस्मों की जानकारी प्रदान की। इस दौरान अतिथियों के द्वारा कृषि सखी को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। यह प्रशिक्षण 24 से 28 सितम्बर 2025 तक कृषि विज्ञान केन्द्र बैतूल में दिया गया। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. मेघा तिवारी के द्वारा आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम में केन्द्र के सभी वैज्ञानिक उपस्थित थे।

मां वैष्णोदेवी सेवा समिति द्वारा सप्तदीप आरती का भव्य आयोजन

बैतूल/भौंरा। नगर के मेन रोड स्थित पीएनबी बैंक के सामने विराजित मां वैष्णो देवी सेवा समिति पंडाल में सप्तमी तिथि पर सप्तदीप आरती का भव्य आयोजन किया गया। इस धार्मिक अनुष्ठान में हजारों की संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित हुए, जिनमें पुरुष, महिलाएं और बच्चे बड़ी आस्था और श्रद्धा के साथ शामिल रहे। कार्यक्रम की विशेषता रही कि नगर की महिलाओं ने अपने घरों से पारंपरिक रीति से सजाई गई सप्तदीप आरती लेकर पंडाल में पहुंचकर मां दुर्गा के चरणों में अर्पित की। ढोल-नगाड़ों और भक्ति गीतों के बीच वातावरण देवी-भक्ति से गूंज उठा। आरती संपन्न होने के बाद श्रद्धालुओं को अनेक प्रकार की प्रसादी वितरित की गई। प्रसादी में फलाहार, मिठाई और पंचामृत का विशेष प्रबंध किया गया था, जिसे ग्रहण कर भक्तों ने मां वैष्णो देवी के आशीर्वाद का अनुभव किया। भौंरा नगर में शारदीय नवरात्र पर्व पर विभिन्न समितियों द्वारा अलग-अलग धार्मिक आयोजन किए जा रहे हैं। वहीं मां वैष्णो देवी सेवा समिति की सप्तदीप आरती ने श्रद्धालुओं को गहरी आध्यात्मिक अनुभूति कराई। यह आयोजन नगर की आस्था और एकजुटता का प्रतीक रहा, जहां हर वर्ग के श्रद्धालु एक साथ शामिल होकर मां दुर्गा के जयकारों से वातावरण को पावन बना रहे।

ऑनर किलिंग केस में 11 साल बाद पिता-दादी समेत परिवार के 6 लोगों को उम्रकैद

बैतूल। पाथाखेडा में ऑनर किलिंग केस में सोमवार को कोर्ट ने 11 साल बाद दोषी पिता समेत परिवार के 6 लोगों को उम्रकैद की सजा सुनाई। यह मामला 1 जनवरी 2014 का है। कंचन कुशवाह (14) का शव उसके फूफा के घर के बाथरूम में जली हुई हालत में मिला था। दरवाजा अंदर से बंद नहीं था। परिजन ने इसे आत्महत्या बताया था। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में खुलासा हुआ था कि उसकी हत्या गला दबाकर की गई थी। लोक अभियोजक गोवर्धन सूर्यवंशी ने बताया कि प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश की कोर्ट में सुनवाई चल रही थी। कोर्ट ने कंचन के पिता सुरेंद्र प्रसाद कुशवाह, दादी गीता कुशवाह, दीपक सिंह और उनकी पत्नी राधिका, ओमप्रकाश और लक्ष्मण को दोषी ठहराया है। इन पर हत्या और साक्ष्य छिपाने के आरोप थे। कोर्ट ने इन्हें भारतीय दंड संहिता की धारा 302 और 120-बी के तहत आजीवन कारावास तथा धारा 201 के तहत सात साल कैद और जुर्माने की सजा सुनाई। इस मामले में कोई चश्मदीद नहीं था। पुलिस ने पडोस के 70 लोगों के बयान दर्ज किए थे।

जिले के कईयों जलाशय अभी तक नहीं भरे, जलसंकट का करना पड़ सकता है सामना

औसत से 4 इंच बारिश कम, रबी फसल पर पड़ेगा असर, किसानों की बढ़ेगी चिंता,

एस.के. द्विवेदी बैतूल

मानसून अब विदाई की कगार पर है। प्राय: 30 सितंबर के बाद वर्षाकाल समाप्त माना जाता है, लेकिन जिले में अब तक औसत बारिश का आंकड़ा पूरा नहीं हो सका है। जिले की सामान्य औसत बारिश 1084 मिमी है, जबकि इस वर्ष अब तक 984 मिमी यानी 39.4 इंच वर्षा दर्ज की गई है। अभी भी जिले में औसत बारिश का आंकड़ा पूरा करने के लिए लगभग 100 मिमी बारिश की दरकार है। जबकि गत वर्ष औसत बारिश का आंकड़ा 1246 मिमी. था। इस प्रकार यदि इस वर्ष औसत बारिश का आंकड़ा पूरा नहीं होता है, तो बारिश की यह कमी न केवल फसलों पर, बल्कि जलाशयों और आने वाले रबी सीजन की सिंचाई व्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव डालेगी। कम वर्षा का सबसे बड़ा असर जलाशयों के जलभराव पर दिखाई दे रहा है। जिले में कुल दो सिंचाई डिवीजन बैतूल और मुलताई हैं। जिसमें बैतूल डिविजन के अंतर्गत आने वाले कुल 104 जलाशयों में से, मध्यम श्रेणी के दो जलाशय सांपना और घोघरी हैं, जिसमें से सांपना पूरी तरह भर चुका है वहीं घोघरी 84 प्रतिशत भरा है और 102 लघु जलाशयों में से 69 पूरी तरह भर सके हैं। वहीं 75 प्रतिशत से ज्यादा भर चुके जलाशय 10, 51 से 75 प्रतिशत तक 12 और 50 प्रतिशत से कम भरे वाले जलाशय 11 हैं। यह स्थिति बताती है कि जिले के कई हिस्सों में पानी का संकट रबी सीजन में गहराने वाला है।

पानी के बंटवारे को लेकर जल उपभोक्ता समिति लेगी निर्णय

रबी सीजन में किसानों को फसलों की सिंचाई के लिए नवंबर से पानी उपलब्ध कराया जाता है। लेकिन मौजूदा हालात को देखते हुए सभी किसानों को समान रूप से पानी मिलना बड़ा मुश्किल प्रतीत हो रहा है। वैसे जल संसाधन विभाग बैतूल के कार्यपालन यंत्री रोशन कुमार सिंह ने स्पष्ट किया है कि पानी के बंटवारे को लेकर अंतिम निर्णय जिला जल उपभोक्ता समिति (डब्ल्यू.यू.ए.) की आगामी दिनों में होने वाली बैठक में लिया जाएगा। यह बैठक अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में प्रस्तावित है। विभाग फिलहाल सभी जलाशयों की स्थिति का डेटा एकत्र कर रहा है। अधिकारियों का मानना है कि सीमित जल संसाधनों का संतुलित बंटवारा ही इस बार सबसे बड़ी चुनौती होगी।

बैतूल डिवीजन के जलाशयों की स्थिति....

भराव की स्थिति प्रति. में	मध्यम	लघु	योग
0 से 25 प्रतिशत	0	2	2
26 से 50 प्रतिशत	0	9	9
51 से 75 प्रतिशत	0	12	12
76 से 99 प्रतिशत	1	10	11
100 प्रतिशत	1	69	70
योग	2	102	104

रबी में समान रूप से पानी मिलना असंभव

विभागीय सूत्रों के अनुसार जिन 69 जलाशयों में शत-प्रतिशत जलभराव हुआ है, वहां किसानों को एक पलेवा और दो पानी सिंचाई के लिए दिया जाएगा और जिनमें 50 से 75 प्रतिशत तक ही पानी है, वहां किसानों को एक पलेवा और एक पानी ही मिल पाएगा। इसी प्रकार जहां 50 प्रतिशत से कम पानी है वहां रबी सीजन में सिंचाई के लिए पानी मिलना मुश्किल प्रतीत हो रहा है, क्योंकि पशुओं और अन्य जरूरतों के लिए भी पानी सुरक्षित रखना होता है। इससे स्पष्ट है कि जिन क्षेत्रों के जलाशय अभी तक खाली हैं, वहां के किसानों को अपनी रबी फसल के लिए या तो निजी संसाधनों पर निर्भर रहना होगा या फिर वर्षा आधारित खेती ही करनी पड़ेगी।

जिले में अब तक बारिश की स्थिति...

ब्लॉक	बारिश
बैतूल	734.6
घोड़ाडोंगरी	1185.0
चिचोली	1073.4
शाहपुर	987.6
मुलताई	964.7
प्रभातपट्टन	932.5
आमला	805.0
भैंसदेही	950.2
आठनेर	749.2
भीमपुर	1462.0
औसत	984.1

इनका कहना..

... जिन जलाशयों में 30 प्रतिशत से कम पानी है, वहां सिंचाई के लिए पानी देने का निर्णय आगामी दिनों में जल उपभोक्ता संस्था (डब्ल्यू.यू.ए.) की बैठक में लिया जाएगा। जिसमें नहर को कब चालू करने का निर्णय तथा कितना पानी स्टोर करना है और कितना देना है, यह निर्णय किया जाएगा। ट्रिपल-आर योजना अंतर्गत जिले में 52 करोड़ रुपए का प्रपोजल बनाया गया है, जिसमें बैतूल डिवीजन की नहरों के शुद्धिकरण एवं मरम्मत के लिए 38 करोड़ रुपए का प्रपोजल राज्य शासन को भेजा गया है।

रोशन कुमार सिंह,
कार्यपालन यंत्री जल संसाधन विभाग

किसी ने गहने गिरवी रखा, तो किसी ने ब्याज से उठाया पैसा, वेतन अनियमितता से परेशान नपा कर्मचारी

अब इधर बिजली कंपनी की धमकी अदा नहीं किया बिल तो नपा की कटेगी बिजली

आमला। शहर के वार्डों में निर्माण कार्य ठप्प है, जनहितैषी कोई कार्य हो नहीं रहे हैं, कर्मचारियों के वेतन के लाले हैं, बिल नहीं भरने पर बिजली कंपनी नपा की बिजली काटने की धमकी दे रही है, यानी पूरी नगर पालिका में कुछ भी ठीक नहीं चल रहा है। बीते कुछ बरसों में जिस तरह से परिषद की निष्क्रियता से पूरा शहर कई वर्ष पीछे चला जा रहा है, उससे अब शहर के जानकारों के माथे पर बल पडने लग गए हैं, और लोग अब सवाल कर रहे हैं कि जब ना तो कर्मचारियों के वेतन हो पा रहे हैं, और ना ही कोई विकास कार्य तो आखिर परिषद में चल क्या रहा है। यहां शहर में इन दोनों सिर्फ यही चर्चा है कि वर्तमान परिषद की निष्क्रियता से कहीं शहर मुश्किल हालातो से जूझता हुआ गर्त में तो नहीं चला जाएगा। नपा को लेकर उपरोक्त चर्चाएं और जानकारों की चिंताएं यूं ही बेवजह नहीं है। दरअसल बीते लंबे समय से नगर पालिका के कर्मचारी अनियमित वेतन प्रणाली के जाल में ऐसी उलझी है कि कर्मचारियों को अपना घर चलाने के लिए गहने तक गिरवी भी रखना पड़ रहा है। इन दिनों त्योहारों का मौसम है तो ऐसे में कई छोटे कर्मचारी ऐसे भी हैं जो ब्याज से पैसा लेकर अपना घर चलाने को मजबूर हो रहे हैं, जैसा कि हमें कर्मचारियों ने बताया है, कि बीते लंबे समय से कभी 2 महीने तो कभी 3 महीने तक सैलरी नहीं हो पा रही है, और अगर सैलरी होती भी है तो वह आधी अधूरी सैलरी ही कर्मचारियों को दी जा रही है, ऐसे में कई कर्मचारी कर्ज के बोझ तले दबे जा रहे हैं, तो कई कर्मचारी मानसिक दबाव भी झेल रहे हैं, इससे नपा के काम का भी प्रभावित होने लगे हैं।

वेतन की मांग 50 लाख मिल रहा 32 लाख-जानकारी के मुताबिक आमला नपा में लगभग दो सौ कर्मचारियों के कुल वेतन के लिए प्रतिमाह 50 लाख रुपए की आवश्यकता होती है, किंतु शासन द्वारा चुंगी क्षतिपूर्ति के माध्यम से आमला नगर पालिका को प्रतिमाह 32 लाख रुपए की प्राप्ति होती है, जिससे प्रतिमाह 17 से 18 लाख रुपए के लिए नगर पालिका को मुश्किलें हो रही है, ऐसे में साल दर साल बिगड़ती व्यवस्था पूरी नपा की आर्थिक व्यवस्था को बदहाल कर रही है, और शहर में विकास के तमाम कार्य भी ठप्प होते जा रहे हैं। इधर नपा कर्मचारियों ने यह भी कहा है कि ऐसा पहली बार हो रहा है कि नपा में कर्मचारियों के वेतन संबंधी मामले इतने बिगड़ चुके हैं, इसके पूर्व में कम से कम कर्मचारियों के वेतन के लाले तो नहीं पड़े थे।

अब बिजली कंपनी की धमकी नपा की कटेगी बिजली- इधर जैसा कि अभी तक बीते कई महीनो से नगर पालिका दावा कर रही थी कि बीते लगभग 25 वर्षों से स्थानीय बिजली कंपनी संपत्ति कर नपा को अदा नहीं कर रही है जो बढ़कर अब 15 लाख रुपए हो चुका है, हालांकि बिजली कंपनी ने इसे स्वीकार तो किया है और कहा है कि पूरे मामले को जल्दी ही निपटा दिया जाएगा। किंतु सोमवार को बिजली कंपनी के कनिष्ठ यंत्री विलास उईके ने इस मौके पर बताया है कि नपा अपने सभी विद्युत संयोजन का प्रतिमाह जो लगभग 12 लाख रुपए होता है, उसे पूरा जमा नहीं कर रही है, ऐसे में आज या कल नपा के सभी विद्युत संयोजन की आपूर्ति रोकी जा सकती है। अगर ऐसा हुआ तो शहर के सभी स्ट्रीट लाइट के साथ-साथ पूरे शहर की पेयजल आपूर्ति भी ठप्प पड़ सकती है।

भाजपा कांग्रेस के बीच पिस तो नहीं जाएगा शहर- शहर की बदहाल होती तस्वीर और बिगड़ती तकदीर को लेकर लोग खासे चिंतित है,लोगों की चिंता अब ये भी है कि देश-प्रदेश में भाजपा की सरकार और आमला नपा में कांग्रेस की सत्ता के बीच बेहतर तालमेल की कमी और जिद शहर को बर्बादी के मुहाने तक तो नहीं पहुंचा देगी।

जनसुनवाई में प्राप्त शिकायतों का प्राथमिकता से करें निराकरणः कलेक्टर

कलेक्टर ने जनसुनवाई में सुनीं नागरिकों की समस्याएं

बैतूल। मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में प्रात: 11 बजे से आयोजित जनसुनवाई में बैतूल कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने नागरिकों की समस्याएं सुनीं। इस दौरान उन्होंने अनेक समस्याओं का निराकरण मौके पर ही किया। जनसुनवाई में कुल 177 आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों का निराकरण गंभीरता पूर्वक किए जाने के निर्देश संबंधित विभागीय अधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा कि एक ही शिकायत के निराकरण के लिए आवेदकों को बार-बार जनसुनवाई में न आना पड़े यह सुनिश्चित किया जाए। इस अवसर पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन, अपर कलेक्टर सुश्री वंदना जाट ने भी नागरिकों की समस्याएं सुनीं। जनसुनवाई में सभी विभागीय अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे। मुलताई तहसील के ग्राम नगरकोट निवासी पंकज खातरकर ने अनावेदकों द्वारा पीएम आवास निर्माण कार्य नहीं करने देने की शिकायत की। जिस पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने मुलताई तहसीलदार को प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए। मुलताई निवासी दयाल सिंह ने राजस्व रिकॉर्ड फाइल उपलब्ध कराए जाने के लिए आवेदन दिया। प्राप्त आवेदन पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने मुलताई एसडीएम को प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए। घोड़ाडोंगरी तहसील के ग्राम कान्हावाडी निवासी नरेंद्र उइके ने आवेदन के माध्यम से गैर आदिवासी को अधीक्षक बनाए जाने संबंधी शिकायत की। जिस पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने संबंधित अधिकारी को प्रकरण की जांच कर कार्रवाई के निर्देश दिए। मुलताई तहसील के ग्राम परमंडल निवासी घुडयि ने ऋण पुस्तिका में नाम सुधारने के लिए आवेदन दिया। जिस पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने मुलताई एसडीएम को प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए।

5 अक्टूबर को निकलेगा विशाल पथ संचलन, तैयारियां अंतिम चरण में

धार । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा धार नगर में 5 अक्टूबर को निकलने वाले एक विशाल पथ संचलन की तैयारी अंतिम चरण में है । संचलन को लेकर एक वृहद योजना बनायी गयी है । संचलन में नगर के हजारों स्वयंसेवक सम्मिलित होंगे ।

संचलन का दिखेगा विराट स्वरूप- प्रति वर्ष निकलने वाला संचलन वैसे तो संघ की अपनी बस्तियों में निकलता है जिसमे उस बस्ती के स्वयंसेवक अपने ही बस्ती में निकलते है । इस बार सभी बस्तियों के स्वयंसेवक एक साथ कदम ताल करते हुए पूरे धार नगर के प्रमुख मार्गो पर अनुशासित ढंग से निकलेंगे । ये दृश्य एक बहुत ही विराट स्वरूप में नगर में दिखाई देगा ।

प्रत्येक बस्ती में हो रहा संपर्क- संचलन को लेकर धार नगर की प्रत्येक बस्ती मे स्वयंसेवकों द्वारा घरङ्क घर जाकर संपर्क किया जा रहा है । संपर्क

के माध्यम से नयी गणवेश वितरण का कार्य एवं संचलन को लेकर चर्चा की जा रही हैं । यह संचलन धार के किला मैदान से प्रारंभ होकर शहर के सभी प्रमुख मार्गो से निकलेगा ।

प्रत्येक बस्ती में गणवेश के लिए कार्यालय- संचलन में सम्मिलित होने वाले बंधुओ की सुविधा के लिए प्रत्येक बस्ती में कार्यालय खोले गए है । इन कार्यालयों से गणवेश का सञ्शुल्क वितरण किया जा रहा है । संघ द्वारा तय गणवेश पहनकर कोई भी व्यक्ति संचलन में भाग ले सकता है । संचलन को लेकर संपूर्ण समाज में उत्साह का वातावरण देखा जा रहा है ।

नगरीय वस्तु भंडार पर भी गणवेश उपलब्ध- रतन बिजनेस हब पर एक नगर स्तर का वस्तु भंडार भी संचालित किया जा रहा है । जहां पर कोई भी व्यक्ति जाकर गणवेश क्रय कर सकता है ।

कर्णावती (अहमदाबाद) से बुलवा रहे गणवेश

संचलन को लेकर इतना उत्साह है कि गणवेश की आपूर्ति नहीं हो पा रही है। जबकि धार जिले हेतु 37 हजार से अधिक गणवेश बुलवाई गई थी फिर भी गणवेश की कमी हो रही है। इस हेतु गत दिनों संघ द्वारा दूसरे कहीं प्रदेशों में संपर्क करके गणेश बुलवाया जा रहा है फिर भी आपूर्ति होने में दिक्कत आ रही है । जिसके लिए संघ लगातार प्रयास कर रहा है।

जीएसटी को लेकर विधायक नीना वर्मा, भाजपा कार्यकर्ता ने दुकानदारों व उपभोक्ताओं के बीच जाकर किया संवाद

धार। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी के द्वारा जीएसटी दर में किए गए अभिनव परिवर्तन ने देश की आम जनता ओर व्यापारी वर्ग को बड़ी राहत प्रदान की है, साथ ही उनका आव्हान गर्व से कहो हम स्वदेशी है इस मूल मंत्र से स्थानीय व्यापार में रौनक देखने को मिल रही है।

भाजपा द्वारा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती के नेतृत्व में जीएसटी रिफॉर्म जन जागरण अभियान के अंतर्गत स्वदेशी वस्तुओं का क्रय विक्रय करे इस आव्हान को लेकर व्यापारियों एवं उपभोक्ताओं के बीच पहुंचकर संवाद किया। विधायक नीना वर्मा ,भाजपा नेता डॉ शरद विजयवर्गीय, नगर मंडल अध्यक्ष विशाल निगम भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ जिला संयोजक मोहित तातेड़ भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा कार्यक्रम में शामिल हुए।

विधायक नीना वर्मा सहित भाजपा कार्यकर्ताओं ने नगर की कपड़ा, इलेक्ट्रॉनिक मेडिकल स्टोर ,छोटे दुकानदारों की दुकानों पर स्टीकर लगाए जिसमें लिखा था घटी जीएसटी मिला उपहार धन्यवाद मोदी सरकार । हर घर स्वदेशी त्योहारों में स्वदेशी का दीप जलाएं अपने जीवन में भी इसे अपनाएं।

विधायक नीना वर्मा ने कहा कि ÷जीएसटी में छूट प्रधानमंत्री जी की दूरदर्शिता का प्रमाण है। इससे व्यापार में नई ऊर्जा का संचार होगा और आम

उपभोक्ताओं को भी वस्तुओं की कीमतों में राहत मिलेगी। मजबूत अर्थव्यवस्था के साथ आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को पूरा करेगी जीएसटी।

जीएसटी बचत उत्सव यात्रा में पूर्व नगर पालिका उपाध्यक्ष कालीचरण सोनवानिया, देवेंद्र सोनोने ,मनीष प्रधान ,दीपक शर्मा, अंकित भावसार ,दीपक बिड़कर, अमित शर्मा ,सुरेश प्रजापत , देवेंद्र रावल रॉकी आहूजा हुकुम लश्करी आशुतोष विजयवर्गीय, जीवन यादव पंकज जाधव सन्नी होड़ा देवेंद्र शर्मा विजेंद्र सिंह ठाकुर देलमी कमलेश बिजवा शांतिलाल शर्मा पुनीत जैन,शुभम राठौड़ डाली जाधव प्रतिभा शर्मा समेत भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

राइट क्लिक

क्या इस देश में 'गजवा-ए-हिंद' सचमुच संभव है?

अजय बोकिल

उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर से शुरू हुआ 'आई लव यू मोहम्मद' पोस्टर विवाद बरेली में विरोध प्रदर्शनकारियों के हिंसक उपद्रव में तब्दील हुआ तो महाराष्ट्र के अहिल्यानगर में किसी ने 'आई लव मोहम्मद' लिखी रांगोली बनाने से गंभीर साम्प्रदायिक तनाव में बदल गया। इन घटनाओं में एक पैटर्न पढ़ें तो लगता है कि सब कुछ अचानक और स्वतस्फूर्त नहीं है। यूं पहली नजर में अपने ईश्वर या उसके दूत से प्रेम करने में कुछ भी गैर नहीं है, लेकिन अगर ऐसा करने के पीछे नीयत प्रेमेतर हो तो सवाल उठना लाजिमी है। और इसे हवा देने में केवल कोई एक पक्ष ही दोषी नहीं है। क्योंकि कानपुर में हुआ विवाद काफी कुछ शांत हो गया था, लेकिन बाद में उसे और भड़काने की मंशा से इसे दूसरी जगह भी फैलाया गया। इसके जवाब में कुछ हिंदू संगठनों ने भी जवाबी पोस्टर वार' आई लव महादेव' शुरू कर दिया। बरेली में हुई हिंसा के बाद यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सख्त जबान में कहा कि भारत में 'गजवा-ए-हिंद' के इरादों को कुचल दिया जाएगा। दोषियों के खिलाफ ऐसी कार्रवाई होगी कि आने वाली उनकी पीढ़ियां याद रखेंगी।

यहां सवाल उठना लाजिमी है कि 'आई लव मोहम्मद' अभियान चलाने का असल मकसद क्या था और इस कवायद का 'गजवा ए हिंद' से क्या ताल्लुक है? यह कैसी अवधारणा है और क्या आज यह व्यावहारिक रूप से संभव है या फिर इसका इस्तेमाल केवल मुसलमानों की कट्टरपंथी भावनाओं को उभारने के लिए किया जा रहा है? क्या इसे पूरी तरह कुचला जा सकता है? सवाल यह भी है कि बरेली में जो कुछ हुआ, वह केवल पैगम्बर मोहम्मद के प्रति असीम प्रेम का परिणाम था अथवा पूरे देश में हिंसा और अराजकता फैलाने की सुनियोजित साजिश का ट्रेलर मात्र था? आलोचकों का मानना है कि मुसलमानों की यह हिंसा असल में मोदी-योगी सरकार के उनके प्रति रवैये से उपजे आक्रोश के सेफ्टी वॉल्व का फूटना है। आपसी संवाद और सौजन्य ही इसका इलाज है। बहुतों का मानना है कि सरकार के प्रति मुसलमानों का असंतोष अपनी जगह है, लेकिन इसे जिस तरीके से उभारा जा रहा है, वह देश की एकता-अखंडता के लिए गंभीर चेतावनी है। इसे महज 'जनाक्रोश की अभिव्यक्ति' मानकर कालीन के नीचे नहीं सरकाया जा सकता।

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

पहले बात ' आई लव यू मोहम्मद' की। ऐसा कोई भी मुसलमान नहीं हो सकता, जो पैगबंर मोहम्मद से मुहब्बत न करता हो। जब कोई व्यक्ति इस्लाम स्वीकार करता है तो सबसे पहले उसे कलमा पढ़वाया जाता है- 'अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं '। हजरत मोहम्मद के प्रति अटल आस्था की शुरूआत यहीं से हो जाती है। अमूमन मुसलमान उनके नाम के आगे आदर के साथ 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' (अल्लाह की रहमतें और शांति उन पर हो) जरूर जोड़ते हैं। तो क्या ऐसे में मोहम्मद साहब के प्रति आत्मिक आस्था का पोस्टर के जरिए इजहार करना गलत है, क्या इसे नई परंपरा माना जाए? लेकिन कुछ लोगों ने इसे 'नई' इसलिए माना कि मिलाद-उन-नबी के जुलूस में अमूमन ऐसे पोस्टर नहीं दिखाई देते। और फिर प्रेम का यह इजहार हिंसक प्रदर्शन में क्यों बदल गया? इस बारे में कुछ लोगों का तर्क है कि कानपुर पुलिस द्वारा पोस्टर प्रकरण में कुछ लोगों के खिलाफ मामला दर्ज करने पर विरोध भड़का। निश्चय ही पुलिस की कार्रवाई पर ऐतराज हो सकता है, लेकिन इस चिंगारी को हवा देने का क्या मतलब है? क्या यह सचमुच 'गजवा-ए-हिंद' की मंशा से किया गया या फिर इसे ज्यादा बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जा रहा है? इसे समझने से पहले 'गजवा-ए-हिंद' को जान लें। अरबी भाषा के 'गजवा-ए-हिंद' का शाब्दिक अर्थ है हिंद (भारत) पर इस्लामिक सैन्य विजय।' दूसरे शब्दों में समूचे भारत का इस्लामीकरण। क्योंकि भारत मुख्य रूप से मूर्तिपूजकों का देश है और इस्लाम में मूर्तिपूजा हराम है। हालांकि कुछ विद्वान 'गजवा' का अर्थ 'अभियान' से लेते हैं। 'गजवा-ए-हिंद' की व्याख्या को लेकर इस्लामिक विद्वानों की अलग-अलग राय है। पिछले साल यूपी में सुन्नी मुसलमानों की सर्वोच्च संस्था 'दारूल उलूम देवबंद' ने फतवा जारी कर गजवा-ए-हिंद को जायज बताया था, जिस पर काफी विवाद हुआ था। दारूल उलूम ने यह फतवा अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर दिया था। राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग ने इस फतवे को देश विरोधी बताया था। दारुल उलूम से पूछा गया था कि क्या हदीस (कुरान के बाद सबसे पवित्र किताब) में 'गजवा-ए-हिंद' का जिक्र है? इस पर दारुल उलूम देवबंद ने साहिहसीता की किताब 'सुन्नन अल-नसाई' का हवाला देते हुए कहा कि इसमें गजवा-ए-हिंद को लेकर एक पूरा चैप्टर है। फतवे के मुताबिक पैगंबर मोहम्मद के करीबी हजरत अबू हुरैरा के हवाले से एक हदीस सुनाई गई है, जिसमें उन्होंने गजवा-ए-हिंद के बारे में कहा है। हुरैरा ने कहा कि मैं इसमें लडूंगा और अपनी सभी धन संपदा को कुर्बान कर दूंगा। मर गया तो महान बलिदानी बनूंगा। जिंदा रहा तो गाजी (विजेता) कहलाऊंगा। कुछ इस्लामिक स्कॉलरों जैसे ब्रिटिश मसीहा फाउंडेशन इंटरनेशनल के सह संस्थापक यूनुस अल गौहर का मानना है कि गजवा-ए-हिंद को हदीस से जोड़कर लोगों को गुमराह किया जा रहा है। गजवा-ए-हिंद में हिंदुओं, सिखों या इस्लाम कबूल नहीं करने वालों के कत्ल की कोई बात नहीं है। गजवा उसे कहते हैं जिसमें मोहम्मद साहब खुद जिस्मानी तौर पर शामिल हों। इसका मतलब ये हुआ कि न तो गजवा हुआ है और न ये है, जो अब लोग कह रहे हैं, लेकिन अगर इस तरह की कोई चीज होती है और उसमें मोहम्मद साहब शामिल नहीं होते तो ये गजवा नहीं बल्कि कत्लेआम होगा। दूसरी तरफ बिहार के राज्यपाल और कानूनविद आरिफ मोहम्मद खान का मत है कि भारत में गजवा-ए-हिंद के नाम से एक झूठा कैंपेन चलाया जा रहा है। इसका मकसद लोगों के दिमाग में यह बात भरना है कि मुसलमान भारत के टुकड़े कर देंगे। इसे कोई भी स्वीकार नहीं करेगा। एक और इस्लामिक विद्वान डॉ.मौलाना वारिस मजहरी के अनुसार ' गजवा-ए-हिंद' का जिक्र हदीसों के छह प्रामाणिक संग्रहों में केवल एक में ही मिलता है। इसकी रिवायतों में एक सहाबी अबू हुरैरा का ही जिक्र आता है। ऐसे में लगता है कि यह रिवायत सही नहीं है और पैगंबर साहब के काफी बाद उमैयाद खिलाफत के शासकों द्वारा इस मकसद से लिखवाई गई है कि वे अपनी आक्रमण और विस्तार की नीति को इस्लाम का जामा पहना सकें और उन्हें तर्कसंगत ठहरा सकें।

हालांकि दुनिया के तमाम इस्लामिक आतंकी संगठन 'वैश्विक इस्लामिक विजय' की व्याख्या को ही आदर्श मानकर सभी जगह शरिया कानून लागू करने के पैरोकार हैं। जबकि कुछ भारतीय इस्लामिक विद्वानों के मत में भारत पर पूर्व में हुए हमलों से 'गजवा-ए-हिंद' पूरा हो चुका है। जबकि कुछ मुस्लिम विद्वानों मानते हैं कि यह काम अभी 50 फीसदी ही पूरा हो पाया है। यह अलग बात है कि भारत पर करीब 6 सौ सालों तक मुस्लिम शासकों का शासन होने के बाद भी 'गजवा-ए-हिंद नहीं हो सका। इसकी वजह भी हमारी गहरी धार्मिक और सांस्कृतिक जड़ें हैं, जो हमारे गंभीर अंतर्विरोधों के बावजूद मिट नहीं पाई हैं। यही भारत की एकता और अखंडता की गारंटी है। दूसरे, आज देश के हालात बहुत अलग हैं। इसकी तुलना मध्ययुग से नहीं की जा सकती।

गौरतलब है कि इस्लाम में दुनिया को दो हिस्सों में बांटा गया है। एक, जहां इस्लाम को मानने वालों का शासन है यानी 'दारूल इस्लाम' और दो, जहां मुसलमान रहते तो हैं, लेकिन शासन किसी गैर इस्लामिक धर्म के मानने वालों का है। इसे 'दारूल हर्ब' कहा जाता है। कुछ अति कट्टर मुसलमानों का मानना है कि चूंकि भारत में शासन करने के लिए मुसलमानों की पर्याप्त संख्या (करीब पच्चीस करोड़) है, इसलिए भारत को भी 'दारूल इस्लाम' ही होना चाहिए। यहां गैर इस्लामिक (काफिर) धर्मों का कोई जगह नहीं है। वैसे भारत में 'गजवा ए हिंद' नाम का एक कट्टरपंथी संगठन भी सक्रिय है। दो साल पहले एनआईए इस संगठन से जुड़े मामलों से जुड़े 3 राज्यों के 7 ठिकानों पर छापा मारा था। ये इस्लामी कट्टरपंथी संगठन भारत के खिलाफ जेहाद छेड़े हुए हैं, उनका सूत्र वाक्य 'गजवा-ए-हिंद' ही है।

जहां तक बरेली हिंसा का सवाल है तो बताया जाता है कि वहां 'आई लव मोहम्मद' के प्लेकार्ड लेकर आला हज़रात दरगाह और इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल प्रमुख मौलाना तौक़ीर रज़ा ख़ान की अपील पर बड़ी संख्या में लोग सड़कों पर उतरे। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को रोकने की कोशिश की। जिसके बाद पथराव, झड़प,लाठीचार्ज और फायरिंग भी हुई। जिसमें पुलिसकर्मियों समेत कई लोग घायल हुए। बताया जाता है कि मौलाना तौकीर रजा के नाम से शुक्रवार की नमाज़ से पहले ही एक पत्र वायरल हुआ था, जिसमें प्रदर्शन में शामिल होने की अपील की गई थी। हालांकि मौलाना ने इसे फर्जी बताया, लेकिन तब तक भीड़ जुटाने का काम हो चुका था। ये घटना जिस अंदाज में घटी, उससे लगता है कि उपद्रव करने की तैयारी पहले से थी। बरेली में दंगा भड़कने के पीछे एक वजह और बताई जाती है। जहां मुस्लिम समाज के लोगों ने 'आई लव मोहम्मद' वाला पोस्टर लगाया था, उसके पास ही बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। इसी दौरान एक बॉल जाकर पोस्टर पर लग गई। इससे लोगों का गुस्सा भड़क गया। जल्द ही इस मामले ने राजनीतिक रंग ले लिया। उप्र सरकार के मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि पूरा राज्य जानता है कि आई लव मोहम्मद मुद्दे का क्या मक़सद है..। यह कुछ लोगों द्वारा शांति और क़ानून व्यवस्था को भंग करने की जानबूझकर साज़िश है। उधर विपक्ष ने उपद्रवियों पर लाठीचार्ज पर सवाल उठाते हुए अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया पर लिखा कि ''सरकारें लाठी चार्ज से नहीं सौहार्द-सद्भाव से चलती हैं। घोर निंदनीय! ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी ने बरेली लाठीचार्ज पर आपत्ति जताते हुए कहा कि प्रेम जताना व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। पैगंबर मोहम्मद के प्रति प्रेम जताना कानून का उल्लंघन नहीं है।

बहरहाल यह विवाद जिस तरह बढ़ता जा रहा है। उससे लगता है कि इस बहाने पूरे देश में अशांति फैलाने का प्लान है। 'प्रेम' से शुरू हुई बात अगर 'सैन्य विजय' तक जा पहुंची है, तो यह चिंताएं बढ़ाने वाली ही हैं। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इसे किसी गहरी साजिश की चेतावनी के रूप मे देख रहे हैं। इसीलिए लखनऊ में एक कार्यक्रम में सीएम योगी ने बरेली हिंसा पर बेहद सख्त भाषा में कहा कि मौलाना भूल गया था कि यूपी में किसका शासन है। जो जिस भाषा में समझता है, उसे उसी की भाषा में समझाया गया। जबकि बलरामपुर की सभा में योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 'गजवा-ए-हिन्द' भारत की धरती पर नहीं होगा। उपद्रव करने वालों का जहन्नुम का टिकट कटा दिया जाएगा। यह सरकार अराजकता को कतई बर्दाश्त नहीं करेगी। अब आगे क्या होता है, यह देखने की बात है, लेकिन जो हो रहा है, वह देश में सौहार्द की दृष्टि से ठीक नहीं है। देश को 'गजवा-ए-हिंद' नहीं, 'गजवा-ए-अमन' चाहिए।

नवरात्रि पर्व मिलकर आराधना करने और सद्भाव बढ़ाने का माध्यम : मुख्यमंत्री

भोपाल के भेल क्षेत्र में भोजपाल गरबा महोत्सव में शामिल हुए सीएम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि नवरात्रि पर्व हमें एक साथ मिलकर आराधना करने, मेलजोल और सद्भाव बढ़ाने का माध्यम बनता है। यह पावन पर्व शक्ति-आराधना का पर्व है।

यह अवसर इतिहास के गौरवशाली अध्याय का स्मरण करवाता है। नवरात्रि पर्व में मां जगदम्बा, भगवान श्रीकृष्ण के स्वरूप और देवी-देवताओं के रूप में हमारे कलाकार उत्साह और श्रद्धा का परिचय देते हैं। ऐसी अनुभूति होती है कि माँ भवानी साक्षात हमारे बीच आ गई हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि दशहरा पर्व भगवान श्रीराम की असुरों पर विजय के साथ माँ जगदम्बा द्वारा महिषासुर का वध करने के उल्लास का प्रतीक भी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार की रात्रि भोपाल के भेल क्षेत्र में भोजपाल गरबा महोत्सव के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे।

वर्ष 2014 के बाद बदल गया है भारत

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने विश्व में अलग पहचान बनाई है। जहां तक शौर्य की बात है अब कोई भी शत्रु भारत में आतंकवादी गतिविधि घटित करने की हिम्मत नहीं कर सकता। भारत, शत्रु को पाताल तक जाकर भी तलाश कर सकता है और शत्रु के घर में घुसकर उसे सबक सिखाने की क्षमता रखता है। ऑपरेशन सिंदूर इस बात का उदाहरण है कि भारत दुश्मन के किसी मंसूबे को सफल नहीं होने देगा। वर्ष 2014 के पहले का भारत बदल चुका है, अब कोई शत्रु भारत से बच नहीं सकता।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्तमान में भारत के समस्त देव स्थानों पर आनंद की वर्षा हो रही है। भारत में शौर्य प्रदर्शन और विकास के साथ कई क्षेत्रों में अभूतपूर्व कार्य हो रहा है। खेल क्षेत्र में की बात करें तो गत रविवार को हुए 20-20 एशिया कप मैच में भारत की विजय सभी भारतीयों का गर्व बढ़ाने का कारण बनी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भोजपाल गरबा महोत्सव का यह दूसरा वर्ष है। यहां नागरिकों और श्रद्धालुओं का उत्साह देखते ही बनता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पदाधिकारी और गरबा महोत्सव के संयोजक श्री सुनील यादव के साथ अन्य पदाधिकारियों को गरबा महोत्सव को अभिनव स्वरूप देने की बधाई दी और सराहना की। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव का प्रदेश के विकास में सक्रिय भूमिका निर्वहन के लिए अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम में संयोजक श्री सुनील यादव, श्री रविंद्र यति, श्री विकास विरानी, श्री अमन यादव और अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। गरबा महोत्सव के आखिरी दिन विशाल जनसमूह और कलाकार दल ने गरबा की आकर्षक प्रस्तुति दी।

कंटेनर ने दो बाइक को टक्कर मारी, 5 की मौत

बड़े बेटे को नहीं पता माता-पिता, भाई-बहन की जान चली गई

भिंड (नप्र)। भिंड में कंटेनर ने दो बाइक को टक्कर मार दी। बाइक सवार दंपती, उनके दो बच्चे और एक अन्य की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद कंटेनर घटनास्थल से कुछ ही दूर पर खड़ा मिला। दंपती का बड़ा बेटा घर पर ही था, उसे हादसे की जानकारी नहीं है। हादसा मंगलवार सुबह करीब 11 बजे फूप इलाके में ग्वालियर-इटावा नेशनल हाईवे-719 पर टेढ़ा की पुलिया के पास हुआ। एक पूरा परिवार खत्म हो गया। भिंड के रहने वाले एक गोताखोर की भी जान चली गई। पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए अस्पताल भेज दिया है।सुनील के बेटे और बेटी की भी जान चली गई। मृतक में एक गोताखोर भोला शामिल है।

एक बाइक पर गोताखोर, दूसरी पर परिवार था-जानकारी के अनुसार, गोरी तालाब के रहने वाले गोताखोर भोला खान अपनी बाइक से बेटी को लेने इटावा (उत्तर प्रदेश) जा रहा था। इसी दौरान सौरा गांव निवासी सुनील बघेल (35), पत्नी पपीता (32), बेटा छोटे (5) और बेटी अंशु (15) को बाइक पर लेकर रिश्तेदार के घर नवदुर्गा पूजन के लिए जा रहा था। तभी एक अज्ञात वाहन ने दोनों बाइकों को टक्कर मार दी। यहां से गुजर रहे लोगों ने बताया कि हादसे के बाद सभी बाइक सवारों की मौके पर मौत हो गई थी। तुरंत पुलिस को सूचना दी गई। शवों को जिला अस्पताल भेजा गया। पुलिस कंटेनर ड्राइवर की तलाश कर रही है।

बड़े बेटे को हादसे की जानकारी नहीं-सुनील अपने परिवार के साथ गाजियाबाद में रहता था। यहां वह कंटेनर चलाता था। चार दिन पहले ही वह अपने गांव सौरा आया था। कंटेनर उसने गाजियाबाद की एक पार्किंग में खड़ा कर दिया था। इस बीच, उसकी पत्नी और बच्चे ननिहाल गए हुए थे। सुबह सुनील पहले बाइक से डगर पहुंचा और वहां से पत्नी और बेटा-बेटी को साथ लेकर चाचा के घर फूप जा रहा था। रास्ते में हादसा हो गया। घटना के बाद परिवार के लोगों का रो-रोकर बुरा हाल है। सुनील का बड़ा बेटा अर्पित घर पर ही था, जिसे हादसे की जानकारी अब तक नहीं दी गई है। गोताखोर भोला उर्फ इरशाद खान (52) 17 साल की उम्र से डूबते लोगों की जान बचा रहा है। गोरी तालाब या आसपास नदी-नालों में कोई गिर जाता है तो लोग भोला को ही रेस्क्यू के लिए बुलाते हैं।

3 भाई-बहनों को तेज रफ्तार बस ने टक्कर मारी, मौत

पन्ना में माता मंदिर से लौट रहे थे, ड्राइवर गाड़ी छोड़कर भागा

पन्ना (नप्र)। पन्ना में तेज रफ्तार टूरिस्ट बस ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में दो सगी बहन और उनके ममेरे भाई की मौत हो गई। एक्सीडेंट अजयगढ़ बायपास पर मंगलवार सुबह हुआ।

पुलिस के मुताबिक, चिमट गांव निवासी करण आदिवासी (19) पिता टूनगा बड़ी देवन मंदिर में माता के दर्शन करने गया था। उसकी बहनें अनारकली (10) और अंजलि (13) भी साथ थीं। दर्शन के बाद तीनों बाइक से घर लौट रहे थे।इसी दौरान छतरपुर से पन्ना की ओर आ रही बस ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि तीनों सड़क पर दूर जा गिरे और गंभीर रूप से घायल हो गए।

बस ड्राइवर को तलाश रही पुलिस

मौके पर मौजूद लोगों ने घायलों को तुरंत जिला अस्पताल पहुंचाया। यहां डॉक्टरों ने जांच के बाद तीनों को मृत घोषित कर दिया।कोतवाली टीआई रोहित मिश्रा ने कहा- हादसे के बाद बस ड्राइवर भाग निकला। उसकी तलाश की जा रही है। बस जब्त कर ली गई है।

गांव में मातम, परिजन का बुरा हाल

अंजलि और अनारकली सगी बहनें थीं। करण उनके मामा का बेटा था। 5 भाइयों में करण तीसरे नंबर पर था। पिता की मौत हो चुकी है। सभी भाई मजदूरी का काम करते हैं।हादसे की खबर जैसे ही पहुंची, गांवभर में मातम छा गया। परिजन का रो-रोकर बुरा हाल है।

अरविंद शर्मा होंगे विधानसभा के नए प्रमुख सचिव

वर्तमान पीएस एपी सिंह आज हो जाएंगे रिटायर, अब मानव अधिकार आयोग में होंगे सदस्य

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश विधानसभा के नए प्रमुख सचिव अरविंद शर्मा होंगे। वर्तमान प्रमुख सचिव एपी सिंह नौ साल तक पीएस की जिम्मेदारी निभाने के बाद रिटायर हो रहे हैं और शर्मा उनका स्थान लेंगे। उधर, एमपी सिंह को मानव अधिकार आयोग में प्रशासनिक सदस्य नियुक्त किया जाएगा, जिसके आदेश जल्द जारी होंगे।

प्रमुख सचिव विधानसभा एपी सिंह को मानव अधिकार आयोग में प्रशासनिक सदस्य बनाए जाने को लेकर सोमवार हुई बैठक में निर्णय लिया गया था। एपी सिंह 2016 से लगातार मप्र विधानसभा के प्रमुख सचिव हैं।

2023 में रिटायरमेंट के बाद उन्हें एक-एक साल की दो सेवावृद्धि दी जा चुकी हैं। इस तरह एपी सिंह 10 साल लगातार विधानसभा में प्रमुख सचिव रहने वाले एकमात्र अधिकारी हैं।

हालांकि उनकी नियुक्ति के प्रस्ताव का कांग्रेस की ओर से नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने विरोध किया था। सिंघार चयन समिति में शामिल थे और उन्होंने कहा है कि कांग्रेस आयोग में प्रशासनिक सदस्य की नियुक्ति के खिलाफ हाईकोर्ट जाएगी।

उज्जैन में चौबीस खम्बा मंदिर में कलेक्टर-एसपी ने की नगर पूजा

देवी महामाया और महालया को मदिरा भोग लगाया, 27 किमी में शराब की धार लगाते हुए 40 मंदिरों में पूजा अर्चना की

उज्जैन (नप्र)। शारदीय नवरात्रि की महाअष्टमी पर मंगलवार सुबह उज्जैन में पारंपरिक शासकीय नगर पूजा हुई। कलेक्टर रौशन सिंह, एसपी प्रदीप शर्मा और प्रतिनिधियों ने चौबीस खम्बा माता मंदिर में देवी महामाया और महालया को मदिरा का भोग लगाया।

ढोल-नगाड़ों के साथ माता की आरती की गई। सोलह श्रृंगार, चुनरी अर्पित कर बलबाखल का भोग लगाया गया। नगर पूजा में शामिल होने के लिए सुबह से ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु मंदिर पहुंचे थे।

माता को मदिरा भोग के बाद कलेक्टर की अगुवाई में एसपी प्रदीप शर्मा, एसडीएम एलएन गर्ग, पटवारी भगवान सिंह सहित 42 कोटवार और श्रद्धालु सड़क पर मदिरा की धार लगाते हुए निकले। ये 27 किलोमीटर तक पैदल चलकर करीब 40 मंदिरों में पूजन-अर्चन करेंगे। नगर पूजा की यह परंपरा राजा विक्रमादित्य के समय से चली आ रही है। इसके लिए आबकारी विभाग शराब की 31 बोतल राजस्व विभाग को मुफ्त उपलब्ध कराता है।

भैरव मंदिर में होगा पूजा का समापन-मंगलवार सुबह 8 बजे चौबीस खम्बा मंदिर से शुरू नगर पूजा रात करीब 8 बजे हांडी फोड़ भैरव मंदिर पर समाप्त होगी। इस दौरान उज्जैन शहर के देवी, भैरव और हनुमान मंदिरों में पूजन-अर्चन

होगा। माता से नगर की सुख, समृद्धि और प्राकृतिक प्रकोप से रक्षा की कामना की जाएगी।

27 किलोमीटर की यात्रा में 40 मंदिरों में पूजा-चौबीस खम्बा मंदिर में माता महामाया और महालया की पूजा के बाद शासकीय दल नगर पूजा के लिए निकलता है। कोटवार मदिरा से भरी हांडी लेकर चलते हैं, इसकी धार नगर के रास्तों पर बहती है। ढोल के साथ निकले शासकीय दल के सदस्य 12 घंटे तक 27 किलोमीटर के दायरे में आने वाले चामुंडा माता, भूखी माता, काल भैरव, चंडमुंड नाशिनी सहित 40 देवी, भैरव और हनुमान मंदिरों में पूजा करते हैं।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

मध्यप्रदेश सरकार का
सोयाबीन उत्पादक किसानों के
हित में बड़ा कदम

भावांतर योजना

पंजीयन प्रारंभ

3 अक्टूबर 2025 से

(17 अक्टूबर 2025 तक)

योजना प्रभावशील

24 अक्टूबर 2025 से

(15 जनवरी 2026 तक)

विस्तृत जानकारी के लिए
2 अक्टूबर को
ग्राम पंचायत में आयोजित
विशेष ग्राम सभा एवं
विजयादशमी मिलन समारोह
में उपस्थित हों।

D-11115/25

आकल्पन : म.प्र. जनसम्पर्क/2025

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

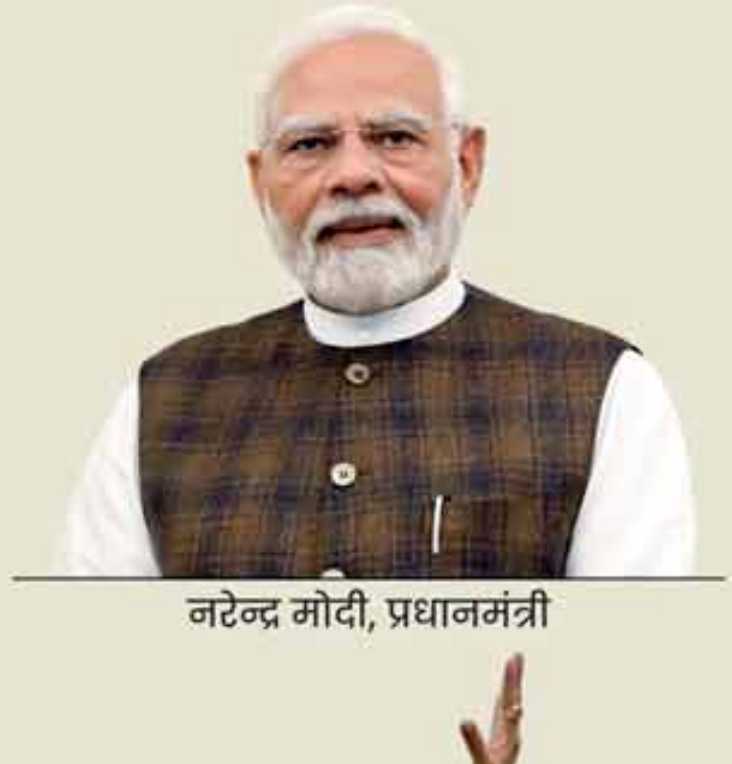

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

"किसानों को उनकी मेहनत का उचित मूल्य और सम्मान देना हमारी प्राथमिकता है। अन्नदाताओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनके कल्याण के लिए हम कृत संकल्पित हैं।"

- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

किसान,
भावांतर योजना
से कैसे लाभान्वित हों...

पंजीयन कहां कराएं

- सोसायटी स्तर पर स्थापित पंजीयन केन्द्र
- ग्राहक सेवा केन्द्र/एमपी ऑनलाइन कियोस्क/"एमपी किसान ऐप" पर

योजना कैसे काम करेगी

- किसान अपनी उपज मंडी में जाकर बेच सकेंगे
- उचित औसत गुणवत्ता (FAQ) उपज हेतु न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी

सरकार से किसान को कितना भुगतान प्राप्त होगा

- MSP से कम लेकिन मंडी मॉडल रेट से अधिक भाव प्राप्त होने पर विक्रय मूल्य और MSP के अंतर की राशि
- MSP और मंडी मॉडल रेट दोनों से कम भाव प्राप्त होने पर मंडी मॉडल रेट और MSP के अंतर की राशि

भुगतान कब और कैसे होगा

- 15 दिवस में भावांतर की राशि का किसान के आधार लिंक बैंक खाते में सीधे अंतरण

मंडी मॉडल रेट क्या है

- विगत दो सप्ताह में विक्रय की गई सोयाबीन का औसत विक्रय मूल्य, यह प्रतिदिन निर्धारित होता है

D-11115/25

सोयाबीन का
न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP)
₹ 5328 प्रति क्विंटल

अन्नदाताओं से अपील

पराली न जलाएं,
प्राकृतिक खेती अपनाएं

आकल्पन : म.प्र. जनसम्पर्क/2025

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी